A Daily News Magazine
इंदौर
रविवार, 15 दिसंबर, 2024

इंदौर एवं भोपाल से एक साथ प्रकाशित
वर्ष 10 अंक 77, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2
(डाक पंजीयन संख्याः MP/IDC/1529/2016-2018)

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmailĐcom
facebookĐcom/subahsaverenews
wwwĐsubahsavereĐnews
twitterĐcom/subahsaverenews

गुनगुनी हो गई धूप ... चंबल का किनारा

फोटोः गिरीश शर्मा

सुप्रभात

सबसे गहरी ऊष्मा के स्रोत
हथेलियों के भीतर हैं
ये समझते हुए भी
मैंने स्वयं और दूसरों को अक्सर
ठंड से ठिठुरते हुए देखा।

सबसे मीठे पानी की
नदियों के उद्गम स्थल
कण्ठ के अंदर हैं
बावजूद इसके जाने कितनी पीढ़ियां
जीवन के रेगिस्तान में प्यासी मर गईं।

हंसी में ही है ईश्वर का वास
पूरी उम्र ख़ुद रोते और
दूसरों को रूलाते हुए
मैंने स्वयं अपने ईश्वर को अदृश्य रखा।

जीवन विरोधाभासों से भरा हुआ है
जो अप्राप्य है
उसका आकर्षण जीने नहीं देता
और ईश्वर के दिए वरदान
एक-एक कर के
शनै:-शनै:
मुट्ठी से रेत की तरह फिसल रहे हैं
जब मैंने जाना
तो यह जाना
कि कुछ जानने के लिए
यह जीवन कितना छोटा है।

-पूनम सोनछात्रा

कांग्रेस की कुनीति-कुरीति ने संविधान का किया शिकार

गरीबी हटाओ सबसे बड़ा जुमला

- पीएम मोदी ने लोकसभा में संविधान पर चर्चा के दौरान कांग्रेस और राहुल गांधी को खूब सुनाया
- पीएम बोले-संविधान संशोधन करने का खून कांग्रेस के मुंह लगा,6 दशक में इसे 75 बार बदला

नई दिल्ली (एजेंसी)। संविधान के 75 साल पूरे होने के मौके पर शनिवार को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने लोकसभा में संविधान पर बोले। प्रधानमंत्री ने कहा- अच्छा होता कि संविधान की शक्ति पर चर्चा होती। दलगत भावना से उबरकर संविधान पर चर्चा करते। लेकिन कुछ लोगों की मजबूरियां होती हैं। मैं बोलना नहीं चाहता था, लेकिन तथ्य रखना जरूरी है। पीएम बोले- कांग्रेस के एक परिवार ने संविधान को चोट पहुंचाने में कोई कसर नहीं छोड़ी। एक परिवार का उल्लेख इसलिए करता हूं कि 75 साल में से 55 साल एक ही परिवार ने राज किया है। देश को क्या-क्या हुआ है, ये जानने का अधिकार है। इस परिवार के कुविचार, कुरीति, कुनीति की परंपरा निरंतर चल रही है। हर स्तर पर इस परिवार ने

संविधान को चुनौती दी है। मोदी बोले- संविधान संशोधन करने का ऐसा खून कांग्रेस के मुंह लग गया कि वे समय-समय पर संविधान का शिकार करती रही।

संविधान की आत्मा को लहूलुहान करती रही। करीब 6 दशक में 75 बार संविधान बदला गया। जो बीज देश के पहले प्रधानमंत्री ने बोया था, उसे खाद-पानी देने का काम एक और प्रधानमंत्री ने किया, श्रीमती इंदिरा गांधी।

भाजपा सरकार ने युवाओं और किसानों के अंगूठे काटेः राहुल

मंत्री बोले-कांग्रेस ने सिखों के काटे गले

नई दिल्ली (एजेंसी)। लोकसभा में शनिवार को लगातार दूसरे दिन संविधान पर चर्चा चल रही है। राहुल गांधी की स्पीच हुई। राहुल सावरकर पर बोले, एकलव्य-द्रोणाचार्य की कहानी सुनाई। भाजपा सरकार पर युवाओं का अंगूठा काटने का आरोप लगाया। राहुल ने कहा- जैसे एकलव्य का अंगूठा काटकर द्रोणाचार्य ने उनका हुनर ले लिया था। उसी तरह भाजपा सरकार अग्निवीर से युवाओं का अंगूठा काट रही है। अडाणी को सारे कारोबार, इंडस्ट्री, पोर्ट, एयरपोर्ट देकर किसानों और युवाओं का गला काटा जा रहा है। राहुल के बयान पर युवा मामलों के मंत्री अनुराग ठाकुर ने जवाब दिया। उन्होंने कहा- आप अंगूठा काटने की बात कर रहे हैं।आपकी सरकार में तो सिखों के गले काटे गए, आपको देश से माफी मांगनी चाहिए।

पर्यटन विविधताओं से समृद्ध है हमारा मध्यप्रदेशः मुख्यमंत्री

सरसी आईलैंड में पर्यटन को बढ़ावा देने इसे बांधवगढ़ टाइगर रिजर्व और संजय नेशनल पार्क से जोड़ेंगे

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा कि हमारा मध्यप्रदेश पर्यटन विविधताओं से भरपूर है। रेवांचल में सरसी आईलैंड देखने पर गोवा और अंडमान निकोबार की अनुभूति हो रही है। हमारा मध्यप्रदेश पर्यटन विविधताओं और विभिन्न विशिष्टताओं से भरा हुआ है, प्रदेश का पर्यटन दुनिया भर के लोगों को आकर्षित करता है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में मध्यप्रदेश लगातार विकास

के पथ पर अग्रसर है। राज्य सरकार के एक वर्ष पूर्ण होने पर प्रदेश में जनकल्याण पर्व मनाया जा रहा है। इसमें प्रतिदिन विकास के नये आयाम रचे जा रहे हैं। जनकल्याण पर्व में प्रतिदिन नई शुरूआत की जा रही है। पर्यटन विकास निगम व्दारा 29 करोड रूपये की लागत से बाण सागर के टापू में 5 हेक्टेयर में सरसी आईलैंड को खूबसूरती से विकसित किया गया है। इससे प्रदेश के पर्यटन को नया आयाम मिलेगा। प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. यादव शहडोल जिले में बाण सागर डैम में स्थित सरसी आईलैंड के लोकार्पण समारोह को संबोधित कर रहे थे। इस अवसर पर उप मुख्यमंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल, पर्यटन एवं धर्मस्व राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) धर्मेन्द्र भाव सिंह लोधी, ब्यौहारी विधायक शरद कोल, जिला पंचायत अध्यक्ष प्रभा मिश्रा विशेष रूप से उपस्थित रहीं।

सरसी आईलैंड में पर्यटन सुविधाओं का किया अवलोकन

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने सरसी आईलैंड में पर्यटकों के लिए की गई सुविधाओं का अवलोकन किया। आईलैंड में पर्यटक सुविधा केंद्र, 3 वोट क्लब, 10 आवासीय कक्ष, रेस्टोरेंट एवं बार, कॉन्फ्रेंस हाल, जिम, लाइब्रेरी, चिल्ड्रन प्ले एरिया तथा अन्य खेल सुविधाएं जैसे बेडमिंटन, टेबिल टेनिस, स्टार ग्रेबिंग, सैंड वॉलीवाल, साइकिलिंग आदि की सुविधाएं, लैड स्केपिंग एवं गार्डन का विकास, 40 किलो वाट क्षमता का सोलर सिस्टम स्थापित किया गया है। सरसी आईलैड को मार्कण्डेय घाट जिला मैहर एवं इटमा घाट जिला उमरिया से जोडा गया है। वोट क्लब एवं जेटटी 4 स्पीड वोट, एक जेट स्की, मिनी क्रुज, ड्रायवर डोरमेट्री, पॉर्किंग, कैफेटेरिया तथा जन सुविधाएं विकसित की गई हैं।

शंभू बॉर्डर पर किसान ने की खुदकुशी की कोशिश

- दिल्ली मार्च पर भेजा गया दल वापस बुलाया गया
- पुलिस ने किसानों पर आंसू गैस-पानी की बौछार छोड़ी

शंभू बॉर्डर (एजेंसी)। हरियाणा-पंजाब के शंभू बॉर्डर पर शनिवार को किसान ने आत्महत्या की कोशिश की है। उसने धरना स्थल के पास सल्फास निगला। शंभू बॉर्डर पर भारी पुलिस बल की तैनाती है। दिल्ली के लिए पैदल निकले 101 किसानों को पुलिस ने रोक दिया और उनपर आंसू गैस का इस्तेमाल किया गया। इसके अलावा पुलिस ने किसानों पर पानी की बौछार की। इससे पहले 6 और 8 दिसंबर को भी किसानों ने दिल्ली कूच की कोशिश की थी लेकिन उन्हें

हरियाणा पुलिस ने रोक दिया था। पुलिस ने उनपर आंसू गैस का इस्तेमाल किया था। इस टकराव में कई किसान घायल भी हो गए थे। किसानों ने शनिवार को एक बार फिर दिल्ली कूच करने की कोशिश की लेकिन बॉर्डर के पास ही उन्हे बैरिकेडिंग लगाकर रोक दिया गया। इसके बाद किसानों और प्रशासन के बीच संवाद भी हुआ। किसान नेताओं ने कहा कि वे देश की बड़ी आबादी का प्रतिनिधित्व करते हैं और अपनी मांगों को लेकर राजधानी जाना चाहते हैं और शांतिपूर्ण तरीके से अपनी बात प्रधानमंत्री के सामने रखना चाहते हैं। किसानों ने कहा कि उनकी तलाशी ली जा सकती है। उनके पास ना तो ट्रैक्टर है और ना ही ट्रॉली।

राज कपूर की 100वीं जयंती पर पीएम ने किया याद

श्रद्धांजलि देते हुएमोदी ने कहा-वह एक सांस्कृतिक राजदूत थे

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय सिनेमा जगत के 'ग्रेट शो मैन' राज कपूर को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने श्रद्धांजलि दी। हाल ही में पीएम मोदी से कपूर फैमिली ने मुलाकात की थी। कपूर परिवार ने पीएम मोदी को राज कपूर की 100वीं जयंती पर आयोजित फेस्टीवल पर आने का न्यौता दिया था। इस मुलाकात के दौरान पीएम मोदी ने राज कपूर के योगदान का जिक्र किया था। उन्होंने कहा था कि राज कपूर अपने समय से बहुत आगे थे, उन्होंने अपनी कहानियों के जरिए दुनिया भर के लोगों के बीच भारत को 'सॉफ्ट पावर' के रूप में स्थापित किया। राज कपूर की 100वीं जयंती पर उनके योगदान की तारीफ करते हुए कहा, उन्होंने भारतीय सिनेमा को वैश्विक मंच पर पहुंचाया। प्रधानमंत्री मोदी ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर पोस्ट किया। लिखा, %आज हम महान फिल्मकार, दूरदर्शी फिल्मकार, अभिनेता

और सदाबहार शोमैन राज कपूर की 100वीं जयंती मना रहे हैं। उनकी प्रतिभा ने कई पीढ़ियों को प्रभावित किया और भारतीय और वैश्विक सिनेमा पर अपनी अमिट छाप छोड़ी है। दूसरी पोस्ट में पीएम मोदी ने लिखा, राज कपूर की फिल्मों के प्रतिष्ठित किरदार और अविस्मरणीय धुनें दुनिया भर के दर्शकों को पसंद आती हैं। लोग उनकी कृतियों की प्रशंसा करते हैं कि कैसे वे विभिन्न विषयों को सहजता और उत्कृष्टता के साथ उभारते हैं। उनकी फिल्मों का संगीत भी बेहद लोकप्रिय है। उन्होंने आगे लिखा, %राज कपूर सिर्फ एक फिल्म निर्माता ही नहीं थे, बल्कि एक सांस्कृतिक राजदूत थे, जिन्होंने भारतीय सिनेमा को वैश्विक मंच पर पहुंचाया। फिल्म निर्माताओं और अभिनेताओं की कई पीढ़ियां उनसे बहुत कुछ सीख सकती हैं। मैं एक बार फिर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और रचनात्मक दुनिया में उनके योगदान को याद करता हूं।%

लालकृष्ण आडवाणी आईसीयू में किए गए भर्ती, हालत स्थिर

- 7 महीने में चौथी बार तबीयत बिगड़ी, मार्च 2024 में भारत रत्न से सम्मानित हुए

नई दिल्ली (एजेंसी)। भाजपा के वरिष्ठ नेता लाल कृष्ण आडवाणी को दिल्ली के अपोलो अस्पताल में भर्ती कराया गया है। वे आईसीयू में भर्ती हैं। अस्पताल के मुताबिक उनकी हालत स्थिर है। 97 साल के आडवाणी को करीब दो दिन पहले अस्पताल लाया गया था। उनके परिवार ने बताया कि उन्हें सर्दी-

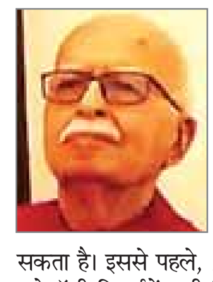

खांसी की परेशानी हुई थी, जो पॉल्यूशन के चलते और बढ़ गई। फिलहाल उन्हें 48 घंटे के लिए न्यूरोलॉजी विभाग में डॉ. विनीत सूरी की देखरेख में रखा गया हैं। कल के बाद उन्हें डिस्चार्ज किया जा सकता है। इससे पहले, 26 जून को एम्स दिल्ली में यूरोलॉजी डिपार्टमेंट की निगरानी में उनका एक छोटा ऑपरेशन हुआ था।

भोपाल का तापमान

अधिकतम 25 °c

न्यूनतम 18°c

सुबह सवेरे

इंदौर ■ रविवार, 15 दिसंबर 2024

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

संक्षिप्त समाचार

महाराष्ट्र में फडणवीस कैबिनेट का विस्तार आज

32 मंत्री शामिल होंगे

मुंबई (एजेंसी)। महाराष्ट्र में फडणवीस सरकार की कैबिनेट का विस्तार 15 दिसंबर को होगा। सूत्रों के मुताबिक, मंत्रियों का शपथ ग्रहण समारोह नागपुर में होगा। इसमें 30 से 32 मंत्री शपथ ले सकते हैं। महाराष्ट्र कैबिनेट में मुख्यमंत्री समेत ज्यादा से ज्यादा 43 सदस्य हो सकते हैं। सूत्रों का कहना है कि भाजपा को 20-21 मंत्री पद मिलने की संभावना है। जबकि शिवसेना को 11-12 और राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी को 9-10 मंत्री पद मिल सकते हैं। संभावित मंत्रियों को शपथ के लिए मुख्यमंत्री फडणवीस खुद फोन करेंगे। महाराष्ट्र भाजपा

प्रमुख चंद्रशेखर बावनकुले ने शुक्रवार को कैबिनेट फाइनल करने के लिए डिप्टी सीएम एकनाथ शिंदे और अजित पवार से अलग-अलग चर्चा की। एकनाथ शिंदे और अजित पवार ने अपने मंत्रियों की लिस्ट मुख्यमंत्री फडणवीस को दे दी है। उपमुख्यमंत्री अजीत पवार ने पिछली सरकार में मंत्री रहे छगन भुजबल, धनंजय मुंडे, धर्मरावबाबा, अदिति तटकरे, अनिल पाटिल के नाम बने रहेंगे। दिलीप वलसे पाटिल पहले ही इनकार कर चुके हैं जबकि हसन मुश्रिफ का पत्ता कट सकता है। सूत्रों के मुताबिक नरहरि जिरवाल, दत्ता भरणे को मंत्री पद मिल सकता है। शिंदे ने उदय सामंत, शंभूराजे देसाई, दादा भुसे, गुलाबराव पाटिल के नाम बरकरार रखे हैं।

मुसलमान मुसलमान रहे ईसाई ईसाई, बस हिंदू को सेक्युलर रहना होगा

- विपक्ष के 'पाखंड' पर संसद में बरसे तेजस्वी सूर्या

नई दिल्ली/बेंगलुरु (एजेंसी)। बीजेपी युवा मोर्चा के अध्यक्ष और बेंगलुरु दक्षिण से सांसद तेजस्वी सूर्या ने शनिवार को लोकसभा में भीमराव आंबेडकर का जिक्र कर विपक्ष पर जमकर निशाना साधा। सूर्या ने कहा कि कांग्रेस के अनुसार, मुसलमान मुसलमान हो सकता है, ईसाई ईसाई हो सकता है, लेकिन हिंदू को धर्मनिरपेक्ष होना चाहिए। उन्होंने कहा कि आज मैंने कम्युनिस्ट पार्टी के विपक्षी सदस्य को सुना

कि आरएसएस आंबेडकर और आंबेडकर के संविधान के खिलाफ थी। ये बात सच से बहुत दूर है। एक बार नहीं, बल्कि दो बार कांग्रेस और कम्युनिस्ट ने साथ मिलकर चुनाव में बाबा साहेब आंबेडकर को जीतने से रोकने के लिए काम किया। तेजस्वी ने कहा कि सावित्री आंबेडकर ने अपनी किताब में लिखा है कि पंडित नेहरू के निर्देश पर एस ए डांगे ने आंबेडकर को हराने के लिए ओवरटाइम काम किया था। जब कांग्रेस और कम्युनिस्ट आंबेडकर को हराने की कोशिश कर रहे थे, जब कम्युनिस्ट नेता एस एस डांगे ने ये नारा दिया।

सुबह-सुबह जेल से बाहर निकले ऐक्टर अल्लू अर्जुन

- कैद में कटी रात, रिहाई में देरी पर भड़के वकील

हैदराबाद (एजेंसी)। शनिवार सुबह-सुबह पुष्पा-2 के अभिनेता अल्लू अर्जुन को जेल से रिहा कर दिया गया है। कल ही तेलंगाना हाईकोर्ट ने उन्हें जमानत दे दी थी। आदेश देरी से मिलने के कारण उन्हें जेल में ही रात गुजारनी पड़ी। इससे पहले वकील अशोक रेड्डी ने जमानत आदेश का पालन नहीं करने के लिए जेल अधिकारियों की आलोचना की है। आपको बता दें कि अल्लू अर्जुन पर 4 दिसंबर को हुए एक भयानक भगदड़ के मामले में हत्या के प्रयास का आरोप लगाया गया था। इस भगदड़ में एक 39 सील की महिला की मौत हो गई थी।

रातापानी टाइगर रिजर्व में बाघिन की मौत

सड़क हादसे में गई जान ; 13 दिसंबर को ही सीएम ने टाइगर रिजर्व का किया था लोकार्पण

भोपाल (नप्र)। रातापानी टाइगर रिजर्व का लोकार्पण करने के 24 घंटे के अंदर रायसेन जिले के गौहरगंज रेंज में एक साल की

बाघिन की मौत हो गई। बाघिन की मौत की वजह सड़क दुर्घटना में अज्ञात वाहन से लगी टक्कर बताई जा रही है। इसे आज सुबह सड़क पर मृत पड़ा पाया गया। इसके बाद वन विभाग के अफसरों को सूचना दी गई। कल ही मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने रातापानी टाइगर रिजर्व का लोकार्पण किया था।वाइल्ड लाइफ एक्टिविस्ट अजय दुबे ने घटना को लेकर कहा कि, कल ही मुख्यमंत्री ने रातापानी टाइगर रिजर्व का लोकार्पण किया है और आज भोपाल-जबलपुर रोड पर गौहरगंज में हादसे में बाघिन की मौत होने की जानकारी सामने आई है। सरकार को इस ओर ध्यान देना होगा कि टाइगर और अन्य जानवरों की सुरक्षा हो सके।

वन अधिकारी बोले- आधी रात के बाद की घटना

वन मंडल अधिकारी सामान्य वन मंडल औबेदुल्लागंज कार्यालय के अनुसार, रात 12 से 1 बजे के बीच यह घटना होने का अनुमान है। एनएच-45 गौहरगंज जबलपुर हाईवे पर अज्ञात वाहन की टक्कर से एक साल की बाघिन की मौत होने की सूचना मिली। रात सवा एक बजे वन मंडल औबेदुल्लागंज के रात्रि गश्ती दल ने सूचना के बाद वरिष्ठ अधिकारियों को जानकारी दी। इसके बाद वन परिक्षेत्र अधिकारी बिनेका और गौहरगंज अधीनस्थ स्टाफ के साथ मौके पर पहुंचे। मृत बाघिन के चारों ओर बेरिकेट्स लगाकर उसकी डेडबॉडी को सुरक्षित किया गया।शनिवार सुबह सात बजे वनमंडल औबेदुल्लागंज के पशु चिकित्सक डॉ. अमित ओड और वाइल्ड लाइफ कंजरवेशन ट्रस्ट के डॉ. प्रशांत, एनटीसीए के प्रतिनिधियों के साथ उप वनमंडलाधिकारी भी मौके पर पहुंचे। इसके बाद एनटीसीए की एसओपी के आधार पर कार्रवाई की गई। टीम ने डॉग स्क्वाड की मदद से आस पास के इलाकों में सर्चिंग की कोशिश की। इसके बाद बाघिन का पोस्टमार्टम कर फोरेंसिक जांच के लिए सैंपल एकत्र किए गए और बाघिन का अंतिम संस्कार किया गया। इस मामले में वन अधिनियम के अंतर्गत अपराध दर्ज किया गया है।

डॉक्टर को जड़े थप्पड़, नर्स से की बदतमीजी

विदिशा में दो युवकों ने अस्पताल में घुसकर की मारपीट ; एक युवक पर चाकू से हमला

विदिशा (नप्र)। विदिशा में डॉक्टर से केबिन में घुसकर मारपीट का मामला सामने आया है। दो बदमाशों ने वॉर्डबॉय के बारे में पूछा, नहीं बताने पर डॉक्टर को थप्पड़ जड़े। उन्होंने एक नर्स से भी बदतमीजी की।

घटना गंजबासौदा के जनचिकित्सालय में शुक्रवार की है। इसका वीडियो शनिवार को सामने आया। हमला करने के बाद बदमाशों ने रास्ते में एक युवक पर भी चाकू से हमला कर दिया। जिससे युवक को चोट आई है। पुलिस ने शनिवार को दोनों आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया है।

नर्स से बदतमीजी कर लौटे, फिर मारपीट- डॉ. चेतन बामोरियों ने बताया कि शुक्रवार को मेरी ड्यूटी इमरजेंसी में थी। मैं रूम नंबर एक में बैठा हुआ था। दोपहर को 5-6 लोग आए और उन्होंने एक वॉर्डबॉय के बारे में पूछा। मैंने कहा कि मैं उसे नहीं जानता, वॉर्ड में जाकर कर्मचारियों से पता लगा लें। इसके बाद वे लोग चले गए। आरोपी युवक दूसरे रूम में गए और एक नर्स से पूछताछ की। नर्स ने भी इस बारे में जानकारी नहीं होने की बात कही। वे लोग नर्स के साथ बदतमीजी कर वापस मेरे रूम पर लौटे और मुझसे मारपीट करने लगे।

डॉक्टर की आवाज सुनकर कर्मचारी आए- डॉक्टर की आवाज सुनकर कर्मचारी आए, तब तक दोनों आरोपी भाग गए। अस्पताल प्रबंधन ने देहात थाना पुलिस से इसकी शिकायत की। पुलिस ने अस्पताल प्रबंधन और घायल सोनू छाबड़ा की शिकायत पर आरोपी युवकों के खिलाफ केस दर्ज कर लिया।

पुलिस ने किया आरोपियों को गिरफ्तार- देहात थाना प्रभारी हरकिशन लोहिया ने बताया कि, मामले में आरोपी राजेंद्र नगर जेल रोड निवासी जतिन और नितेश को गिरफ्तार कर लिया है। आरोपियों ने डॉक्टर से मारपीट के बाद एक युवक पर चाकू से हमला किया है।

डॉक्टरों ने एसडीएम को सौंपा ज्ञापन- अस्पताल में डॉक्टर के साथ हुई मारपीट की घटना से डॉक्टरों में आक्रोश है। शनिवार दोपहर नर्सिंग स्टाफ और डॉक्टर इकट्ठे होकर एसडीएम के पास पहुंचे।

विदेश में नौकरी के नाम पर अब नहीं होगा 'फर्जीवाड़ा'

- सरकार ने भारतीयों को ठगों से बचाने के लिए उठाया बड़ा कदम

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत से हर साल लाखों लोग विदेश में नौकरी के लिए जाते हैं। इनमें से ज्यादातर लोगों को अच्छी कंपनियों में नौकरी मिल जाती है, लेकिन कुछ लोग ऐसे होते हैं, जो विदेश में नौकरी के नाम पर ठगी का शिकार हो जाते हैं। हाल के सालों में विदेश में नौकरी दिलाने के नाम पर

हजारों लोगों के साथ ठगी के केस सामने आए हैं। कुछ मामलों में तो लोगों को दूसरे देशों में ले जाकर फंसा दिया गया है। उनसे जिस काम का वादा किया गया था, वो ना करवाकर कुछ और भी करवाया जा रहा है। नौकरी के नाम पर ठगी कई भारतीयों को अपने जाल में फंसा रही है। लोगों को अच्छी नौकरी का लालच देकर विदेशों में गैरकानूनी काम करवाया जाता है और उनका शोषण किया जाता है। हालांकि, भारत सरकार ने विदेश में नौकरी के नाम पर लगातार हो रहे फर्जीवाड़े पर लगाम लगाने का काम किया है।

वायुसेना को मिलने जा रहे हैं 12 सुपर सुखोई

नई दिल्ली (एजेंसी)। चीन और पाकिस्तान के साथ एक साथ जंग की स्थिति को देखने हुए वायुसेना अपनी क्षमता में इजाफा कर रही है। अगर दो मोर्चे पर एकसाथ जंग होती है तो उसे 42 स्क्वाड्रन स्ट्रेंथ की जरूरत होगी जबकि अभी सिर्फ 31 ही हैं। इसी को देखते हुए वायुसेना ने 12 सुखोई विमानों की डील की है। भारत सरकार की सुरक्षा मामलों की केन्द्रीय मंत्रिमंडल की समिति ने बड़ा फैसला लेते हुए वायुसेना के लिए 12 सुखोई-30 फ़ाइटर की खरीद पर मोहर लगा दी है। इन विमानों के लिए हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड के साथ 13500 करोड़ रुपये की डील भी साइन कर ली। इन एसयू-

- 13500 करोड़ की डील हुई फाइनल, पाक-चीन को मिलेगा

30 को स्वदेशी तकनीक से एडवांस किया जाएगा। इसमें खतरनाक स्टेल्थ टेक्नोलॉजी, राडार, मिशन कंप्यूटर, इलेक्ट्रॉनिक वॉरफेयर सुईट, कॉकपिट लेआउट और हथियारों का सिस्टम बदलने वाला है। नए अपग्रेडेड एसयू-30 में ज्यादा एडवांस एक्टिव इलेक्ट्रॉनिकली स्कैन्ड ऐरे राडार लगाए जाएंगे। यह दुश्मन को काफी दूर से ही टोह लेंगे। जंग के दौरान विमान की सिचुएशनल अवेयरनेस और बचे रहने की संभावनाएं बढ़ जाएंगी। इन जेट का निर्माण एचएएल की नासिक की फैक्टरी में किया जाएगा और इसमें स्वदेशीकरण का हिस्सा 62.6 प्रतिशत होगा।

चुनाव से पहले दिल्ली में कानून व्यवस्था पर रार

नई दिल्ली (एजेंसी)। 'आप' के राष्ट्रीय संयोजक और पूर्व मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने दिल्ली में बिगड़ती कानून-व्यवस्था को लेकर केंद्रीय गृहमंत्री अमित

शाह को चिट्ठी लिखी है। केजरीवाल ने इस मुद्दे पर चर्चा करने के लिए अमित शाह से मिलने का समय मांगा है। पूर्व सीएम अरविंद केजरीवाल ने कहा कि दिल्ली की कानून व्यवस्था केंद्र सरकार के अधीन है। इसके बावजूद दिल्ली को अब अपराध की राजधानी के नाम से जाना जा रहा।

46 साल बाद 'कैद' से निकले हनुमान और शिवलिंग

- संभल में मुस्लिम बस्ती के बीच खुला मंदिर का ताला

संभल (एजेंसी)। उत्तर प्रदेश के संभल में अतिक्रमण हटाओ अभियान के दौरान कई बरसों से बंद पड़े प्राचीन मंदिर के अंदर से चौंकाने वाला राज निकलकर सामने आया है। मुस्लिम आबादी के बीच संभल के इस मंदिर में करीब 46 साल के ताला नहीं खुला था। यहां लोगों ने अवैध रूप से कब्जा करके रखा था। यह प्राचीन हनुमान मंदिर बताया जा रहा है। यहां शिवलिंग और नंदी की मूर्ति भी मिली है। मूर्तियां सुरक्षित हैं लेकिन परिसर के कुएं को पाटने के साथ ही पीपल का पेड़ भी काटकर अवैध अतिक्रमण किया गया है। सीओ अनुज चौधरी ने बताया कि इस प्राचीन मंदिर के बारे में लोगों ने बताया तो आज यहां ताला तोड़कर देखा गया। अंदर मंदिर और मूर्तियां हैं, जिस पर धूल जमी हुई है। अब ये पूरी तरह से खोल दिया गया है। ये संभल के खग्गू सराय इलाके में निकला है। मौके पर एसएसपी समेत आला अधिकारी आ गए हैं।
भारी सुरक्षा व्यवस्था के बीच सुबह से ही डीएम और एसपी ने सघन चेकिंग अभियान चलाया हुआ है। स्थानीय निवासी और नगर हिन्दू सभा के संरक्षक ने बताया कि पहले यहां हिंदू आबादी हुआ करती थी। लेकिन 1978 के सांप्रदायिक दंगे के दौरान कई हिंदू घरों में आग लगा दी गई। डर के चलते हिंदू परिवारों ने यहां से पलायन कर दिया और जाकर हिंदू आबादी वाले इलाके में बस गए। उन्होंने बताया कि पहले इस मंदिर में भजन कीर्तन हुआ करते थे।
मंदिर के बराबर में ही एक कुआं है, जिसको अकील अहमद नामक शख्स ने पाट दिया। उन्होंने बताया कि मंदिर मुस्लिम

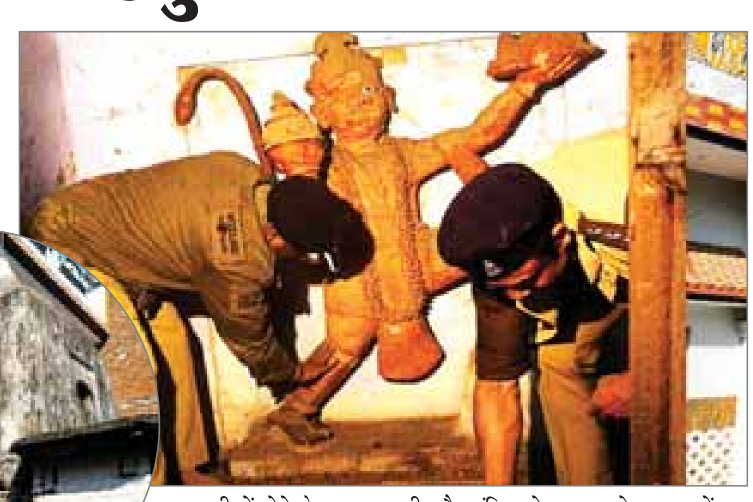

आबादी में होने के चलते उस पर कब्जा कर मकान में मिला लिया है। कई साल से ताला बंद था और कोई आता नहीं था। पुजारी अपना मकान बेचकर चले गए थे और मंदिर में ताला जड़ दिया था। मंदिर के पास बना कुआं भी दूसरे समुदाय ने पाट कर बंद कर दिया था। जिलाधिकारी डॉ. राजेंद्र पैंसिया ने मंदिर के बारे में पूरी जानकारी ली और मंदिर को पुनः पुराने स्वरूप में लौटाने की बात कही। इसके साथ ही नगर पालिका की टीम को बुलाकर मंदिर पर हुए अवैध कब्जे को हटाने और कुएं को खुलवाने के लिए नगर पालिका को आदेश दिया। एडीएम वंदना मिश्र ने बताया कि मंदिर में मूर्तियां सुरक्षित हैं। हालांकि यहां एक कुआं था, जिसे पाट दिया गया है। और पीपल सहित कुछ भी काटकर कब्जा हुआ है।

स्विट्जरलैंड ने भारत का मोस्ट फेवर्ड नेशन दर्जा किया खत्म

वहां भारतीय कंपनियों को 10 फीसदी ज्यादा टैक्स देना होगा, नेस्ले विवाद के बाद लिया ऐक्शन

बर्न (एजेंसी)। स्विट्जरलैंड सरकार ने भारत से मोस्ट फेवर्ड नेशन (एमएफएन) का दर्जा वापस ले लिया। स्विस सरकार के इस फैसले के बाद अब वहां काम करने वाली भारतीय कंपनियों को 1 जनवरी 2025 से 10 फीसदी टैक्स ज्यादा टैक्स देना होगा। स्विट्जरलैंड ने डबल टैक्स अवॉइडेंस एग्रीमेंट के तहत भारत को एमएफएन राष्ट्र का दर्जा दिया था। शुक्रवार को स्विट्जरलैंड की तरफ से कहा गया भारतीय सुप्रीम कोर्ट के फैसले की वजह से उसे यह कदम उठना पड़ा है। दरअसल पिछले साल नेस्ले से संबंधित एक मामले में भारतीय सुप्रीम कोर्ट ने फैसला दिया था कि यह तब तक लागू नहीं किया जा सकता जब तक कि इसे इनकम टैक्स एक्ट के तहत नोटिफाई न किया जाए। इस फैसले का मतलब था कि नेस्ले जैसी कंपनियों को अपने लाभांश पर ज्यादा टैक्स देना होगा।

ठंड के आगोश में उत्तर भारत, छूट रही कंपकंपी

नई दिल्ली (एजेंसी)। उत्तर भारत में पड़ रही ठंड के बीच मौसम विभाग ने बताया है कि वेस्टर्न डिस्टर्बेंस की वजह से जम्मू कश्मीर, लद्दाख और उसके आसपास के इलाकों में 16 और 17 दिसंबर को बारिश, बर्फबारी होने वाली है। यानी कि मौसम बिगड़ने वाला है। इसके अलावा, आने वाले दिनों में यूपी, बिहार समेत कई राज्यों में शीतलहर की चेतावनी जारी की गई है। वहीं, कल साउथईस्ट बंगाल की खाड़ी में कम दबाव का क्षेत्र बनने जा रहा है, जिसकी वजह से दक्षिण में कई राज्यों में बारिश होगी। पिछले 24 घंटे के मौसम की बात करें तो तमिलनाडु में भारी से बहुत भारी बारिश हुई। इसके अलावा, पंजाब, मध्य प्रदेश, जम्मू कश्मीर, लद्दाख, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, हरियाणा, चंडीगढ़, उत्तर प्रदेश आदि राज्यों में शीतलहर देखी गई। मौसम विभाग ने बताया कि तमिलनाडु में 17 और 18 दिसंबर को भारी से बहुत भारी बारिश होने वाली है। इसके अलावा, 14 और फिर 16-19 नवंबर तक भारी

शीतलहर की चेतावनी, दक्षिण भारत के राज्यों में बारिश अनुमान

बारिश का दौर जारी रहेगा। वहीं, केरल में 14, 18, 19 दिसंबर को भारी बारिश होने की संभावना है। इसके अलावा, तटीय आंध्र प्रदेश, रायलसीमा, साउथ इंटीरियर कर्नाटक में 17 और 18 दिसंबर को भारी बारिश का

अलर्ट है। अंडमान और निकोबार द्वीप में 14 और 15 दिसंबर को भारी बारिश की चेतावनी जारी की गई है।

साइबर ठग की धमकी से डरे छात्र ने दिये 10 हजार रुपए

ठग बोले-तुम्हारे विरुद्ध पोर्न वीडियो देखने की जांच चल रही है

इंदौर। साइबर अपराधियों ने एक छात्र को पोर्न वीडियो देखने का आरोप लगाकर ठग लिया।अपराधी उसे दोबारा ठगने की कोशिश कर रहे थे कि छात्र थाने जा पहुंचा। अब साइबर सेल में पदस्थ एक्सपर्ट जांच कर रहे है। बैंक खातों और मोबाइल नंबरों की जानकारी जुटाई जा रही है। एडिशनल डीसीपी जोन-1 आलोक शर्मा के मुताबिक ठगी शुभम रेसिडेंसी निवासी 22 वर्षीय राहुल यादव के साथ हुई है। उसने पुलिस को बताया कि बुधवार सुबह करीब साढ़े 10 बजे अनजान मोबाइल से कॉल आया था। आरोपित ने स्वयं को भोपाल क्राइम ब्रांच का अफसर बताया और कहा कि तुम्हारे विरुद्ध पोर्न वीडियो देखने के

संबंध में जांच चल रही है। गूगल हिस्ट्री से पोर्न साइट्स देखने की जानकारी मिली है। जांच बंद करने के लिए आरोपित ने 10 हजार रुपये मांगे। छात्र घबरा गया और आरोपित द्वारा बताए खाते में छह बार में 10 हजार रुपये ट्रांसफर कर दिए। कुछ देर बाद पुनः दूसरे अफसर ने काल लगाया और 40 हजार रुपये अतिरिक्त मांगे।इस पर छात्र घबरा गया और टीआइ नीरज बिरथरे को पूरी घटना बताई। टीआई ने साइबर हेल्प लाइन पर शिकायत दर्ज करवाई है। विजयनगर पुलिस ने गुरुवार को अनम अहमद कोहेफिजा भोपाल,विधु विवेक भारद्वाज निवासी इंद्रपुरी किशनगंज,रवि देवेंद्र वर्मा निवासी रुक्मणी नगर को हिरासत में लिया था। उन पर गौरव राठौर निवासी बड़ी भमौरी ने होटल में बंधक बनाने का आरोप लगाया है। पुलिस ने युवकों को हिरासत में लेकर पूछताछ की तो आरोपितों ने बताया वह बैंक खातों की सप्लाई करते हैं। आरोपित गिरोह बनाकर साइबर अपराधियों को खातों की सप्लाई कर रहे थे। टीआइ सीके पटेल के मुताबिक पुलिस को चार खातों की जानकारी मिल चुकी है। एक खाते में डेढ़ करोड़ रुपये का ट्रांजेक्शन मिला है। आरोपित ठग से सिर्फ मोबाइल पर ही संपर्क करते थे। पुलिस उस नंबर की भी जांच कर रही है। खाते में जमा राशी के संबंध में बैंकों से डेटा मांगा गया है।

सरकार का पहला साल सुशासन, विकास, विरासत के लिए समर्पित

- मुख्यमंत्री ने किसान, गरीब, महिला और युवाओं के लिए द्वार खोले

(श्याम त्रिवेदी)

झाबुआ। प्रदेश की महिला एवं बाल विकास मंत्री निर्मला भूरिया ने कहा कि मुख्यमंत्री मोहन यादव के नेतृत्व में गठित भारतीय जनता पार्टी की सरकार ने सफल एवं सार्थक एक साल पूरा कर लिया है। सरकार का यह प्रथम वर्ष मप्र मे सुशासन, विकास और विरासत के संवर्धन के लिए समर्पित रहा है।मंत्री ने आज सरकार का एक साल पूरा होने पर रिपोर्ट कार्ड प्रस्तुत करते हुए पत्रकार वार्ता में यह बात कही। सुश्री भूरिया ने कहा कि सीएम ने अपने एक साल के कार्यकाल में प्रदेश की उन्नति के लिये किसान, गरीब, महिला और युवाओं के लिए सफलता के द्वारा खोल दिये है। इससे इन वर्गो के जीवन में अभूतपूर्व परिवर्तन आया है। उन्होंने बताया कि 11 दिसम्बर से मुख्यमंत्री जनकल्याण अभियान और राज्य सरकार के एक वर्ष पूर्ण होने पर जनकल्याण पर्व शुरू किया गया है। इस अभियान में शासन की जनकल्याणकारी योजनाओं से वंचित नागरिकों को लाभान्वित किया जाएगा और जन समस्याओं का मौके पर शिविर लगाकर निराकरण किया जायेगा। भूरिया ने महिला एवं बाल विकास विभाग द्वारा किए गए विशेष कार्यो की जानकारी देते हुए बताया कि विभाग ने एक संवेदनशील निर्णय लेते हुए मिनी आंगनवाडी केन्द्रों में कार्य करने वाली समस्त कार्यकर्ताओं को उनके अनुभव को दृष्टिगत रखते हुए मुख्य आंगनवाड़ी कार्यकर्ता बना दिया गया। हमने आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं एवं सहायिकाओं की नियुक्ति प्रक्रिया को सरल, सहज एवं पूर्ण पारदर्शी बनाने के लिए एमपी ऑनलाइन काउंसलिंग पोर्टल के माध्यम से ऑनलाइन नियुक्ति प्रक्रिया नवंबर 2024 से प्रारंभ कर दी है। मंत्री भूरिया ने प्रदेश सरकार के एक वर्ष की उपब्धियों एवं विभिन्न योजनाओं में किये गए कार्यो को विस्तार से बताया। इस अवसर पर भाजपा जिलाध्यक्ष भानू भूरिया, पूर्व जिलाध्यक्ष ओम शर्मा भी मौजूद थे।

धार जिला न्यायालय के प्रशासनिक, अधिकारी राजेन्द्र तिवारी का निधन

शहर के कई गणमान्य नागरिकों ने अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए

धार। जिला न्यायालय धार के प्रशासनिक अधिकारी राजेन्द्र तिवारी का अल्प बीमारी के बाद दुखद निधन हो गया। उनके निधन की खबर लगते ही जिला विशेष न्यायाधीश पंकज माहेश्वरी तथा अनेक गणमान्य नागरिकों, पत्रकारों एवं राजनेताओं ने प्रातः उनके निवास पर पहुंचकर पार्थिव देह पर श्रद्धासुमन अर्पित किए। रज्जू भैया के नाम से लोकप्रिय राजेंद्र तिवारी की अंतिम यात्रा आज प्रातः उनके निवास चाणक्यपुरी से निकल कर स्थानीय मुक्तिधाम पर पहुंची। जहां उनके सुपुत्र बृजेश एवं अभिषेक तिवारी द्वारा मुखाग्नि दी गई। मुक्तिधाम पर आयोजित शोक सभा में जिला कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष धीरज दीक्षित, जिला पत्रकार संघ के अध्यक्ष छोटू शास्त्री, साहित्यकार डॉ श्रीकांत द्विवेदी, प्रदेश कांग्रेस सचिव सोहेल निसार, आद्य गौड़ ब्राह्मण समाज के पूर्व अध्यक्ष सुरेंद्र शर्मा, नगर पालिका पूर्व उपाध्यक्ष कालीचरण सोनवाले ने श्रद्धांजलि दी। इसके अलावा कवि दिलीप दुबे, जिला अभिभाषक संघ के अध्यक्ष हितैष ठाकुर, पूर्व शहर कांग्रेस अध्यक्ष अशोक तिवारी, न्यायिक कर्मचारी संघ के पूर्व अध्यक्ष अशोक जोशी, न्यायिक कर्मचारी संघ के अध्यक्ष राजेश मिश्रा, अभा ब्राह्मण समाज के अध्यक्ष अश्विन जोशी तथा वरिष्ठ अभिभाषक देवीप्रसाद शर्मा ने भी रज्जू भैया के व्यक्तित्व पर विचार व्यक्त करते हुए श्रद्धांजलि अर्पित की।

डेंगू का वायरल बदल रहा है रूप, लिवर पर भी हो सकता है इसका असर

इंदौर। इंदौर शहर में बुधवार रात 13 वर्षीय बच्चे की डेंगू से मौत होने के बाद लोगों की चिंता बढ़ गई है। स्वास्थ्य विभाग इसे लेकर चिंता में आ गया है, क्योंकि उसके रिकॉर्ड में 20 नवंबर के बाद डेंगू का कोई नया मरीज दर्ज ही नहीं है। डेंगू हर दो-तीन वर्ष में अपना स्वरूप बदल लेता है। इस कारण मरीजों की संख्या तेजी से बढ़ने लग जाती है। इंदौर में इस वर्ष अब तक डेंगू के 550 मरीज मिल चुके हैं। इनमें से 327 पुरुष और 223 महिलाएं हैं। वहीं मलेरिया के सात और चिकनगुनिया के 20 मरीज मिल चुके हैं।

विशेषज्ञों के मुताबिक इस बार डेंगू का स्वरूप बदला हुआ रहा, क्योंकि बड़ी संख्या में मरीजों को अस्पताल में भर्ती करने की आवश्यकता पड़ी थी। वहीं कई मरीज ऐसे भी थे, जिनमें डेंगू के लक्षण थे लेकिन जांच रिपोर्ट निगेटिव आ रही थी।

अचानक से प्लेटलेट्स कम हो जाते हैं- डेंगू में मरीज को लगता है कि वह स्वस्थ हो रहा है, लेकिन अचानक से इसमें प्लेटलेट्स कम हो जाते हैं। इसलिए इसका समय पर उपचार करवाना काफी आवश्यक होता है। डेंगू के कारण प्लेटलेट्स बहुत तेजी से गिरते हैं। लिवर पर तेजी से असर होता है। मरीजों की बढ़ती संख्या सिर्फ इंदौर में ही नहीं

रही, पूरे प्रदेश में इस वर्ष अधिक संख्या रही है। इसके वैरिएंट की जांच के लिए पुणे स्थित लैब में सैंपल भेजे जाते हैं, लेकिन अभी नहीं भेजे गए हैं।

डेंगू के लक्षण वाले मरीजों को वायरल हिमोरेजिक फीवर- बता दें कि इंदौर में इस वर्ष सात हजार लोगों में डेंगू के लक्षण नजर आने पर अलाइजा टेस्ट किया गया है। इसमें से लगभग 550 लोगों में डेंगू की पुष्टि हुई है। बाकी मरीजों में लक्षण होने के बाद भी रिपोर्ट निगेटिव पाई गई। सुपर स्पेशिएलिटी अस्पताल के डॉ. अमित अग्रवाल ने दावा किया है कि निगेटिव रिपोर्ट आने वाले मरीजों में से 50 फीसदी में वायरल हिमोरेजिक फीवर पाया गया। इसके सारे लक्षण डेंगू बुखार जैसे ही होते हैं। हालांकि इसमें मरीज को डेंगू की अपेक्षा खतरा बहुत रहता है।

निगेटिव रिपोर्ट आने के बाद लोग समझते हैं कि वह बिल्कुल ठीक है, उन्हें विशेषज्ञ की सलाह से उपचार लेना चाहिए। इससे ठीक होने में पांच से आठ दिन तक का समय भी लग जाता है। वायरल हिमोरेजिक फीवर में प्लेटलेट्स धीरे-धीरे कम होती है।

मध्यभारत का सबसे बड़ा प्लास्टिक उद्योग सम्मेलन इंदौर में 9 से 12 जनवरी तक

इंदौर। भारत का सबसे बड़ा प्लास्टिक उद्योग सम्मेलन, एक नए आयाम पर पहुंचने के लिए तैयार हो रहा है। इस आयोजन का मुख्य उद्देश्य प्लास्टिक उद्योग को भविष्य के लिए तैयार करना है। इस वर्ष की थीम प्लास्टिक इंडस्ट्रीज रेडी फॉर फ्यूचर, आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस, पाइप, एग्रीकल्चर और फार्मा इनोवेशन एंड टेक्नोलॉजी है। प्लास्टपैक 2025 लाभ गंगा एक्जीबिशन सेंटर, इंदौर में 9 से 12 जनवरी, 2025 तक आयोजित किया जाएगा।

सचिन बंसल प्रेसिडेंट इंडियन प्लास्ट पैक फोरम और हितेश मेहता चेयरमैन प्लास्ट पैक 2025 के मार्गदर्शन में आयोजित होने वाले प्लास्टपैक 2025 में देशभर के प्रतिनिधित्व को सुनिश्चित करने के उद्देश्य से आईपीपीएफ की टीम देश भर के मुख्य शहरों में पहुंच रही है। इसी कड़ी में 12 दिसम्बर को प्लास्टपैक की टीम इंदौर पहुंची और मीडिया से मुलाकात की, जिसमें प्लास्टपैक के चार दिवसीय आयोजनों की रूपरेखा को साझा किया गया। प्लास्टपैक की टीम ने इंदौर और उसके आस-पास के शहरों के इंडस्ट्री से जुड़े कई गणमान्य लोगों से भी मुलाकात की। इंडियन प्लास्टपैक

फोरम के प्रेसिडेंट सचिन बंसल ने कहा, प्लास्टपैक 2025 प्लास्टिक उद्योग के लिए एक अनूठा मंच है। यह आयोजन इंडस्ट्री के नवीनतम रुझानों को प्रदर्शित करने के साथ उद्योगपतियों, वैज्ञानिकों और पॉलिसी मेकर्स को एक साथ लाकर इंडस्ट्री के सामने आने वाली चुनौतियों का समाधान खोजने का अवसर भी प्रदान करेगा। प्लास्टपैक 25 केवल एक प्रदर्शनी नहीं है यह भारत के प्लास्टिक और पैकेजिंग उद्योग के लिए अपनी ताकत, इनोवेशन और स्थिरता के प्रति प्रतिबद्धता को प्रदर्शित करने का एक मंच है।

इंडियन प्लास्टपैक फोरम के वाईस प्रेसिडेंट जाहिद शाह ने कहा आज हमें खुशी हो रही है कि हम इंदौर आपके बीच पहुंचे हैं। हम आपके माध्यम से प्लास्टिक और पैकेजिंग से जुड़े सभी स्टेकहोल्डर्स को आमंत्रित करते हैं। प्लास्टपैक 2025 प्लास्टिक उद्योग के लिए एक अनूठा मंच है। यह आयोजन इंडस्ट्री के नवीनतम रुझानों को प्रदर्शित करने के साथ उद्योगपतियों, वैज्ञानिकों और पॉलिसी मेकर्स को एक साथ लाकर इंडस्ट्री के सामने आने वाली चुनौतियों का समाधान खोजने का अवसर भी प्रदान करेगा।

शहर के कई क्षेत्रों में गंदगी पसरी

- जनता की शिकायतों पर भी ध्यान नहीं, बिना समाधान हो रहीं बंद

इंदौर। स्वच्छता में अग्रणी इंदौर में अब लापरवाही नजर आने लगी है। कई क्षेत्रों में गंदगी पसरी हुई है और जिम्मेदार ध्यान तक नहीं दे रहे हैं। नगर निगम के 311 एप पर भी शिकायतें पेंडिंग हैं लेकिन कोई कार्रवाई नहीं हो रही है। एयरपोर्ट, बाणगंगा, देवास नाका, लसूड़िया, मूसाखेड़ी, हरसिद्धी, लालबाग, सुपर कारिडोर आदि कई क्षेत्रों में स्थिति बहुत खराब है।

निगम के 311 एप पर भी नहीं हो रही सुनवाई- नगर निगम इंदौर ने जनता की परेशानियों के लिए 311 एप बनाया। इस पर शिकायतें करने पर भी जनता की सुनवाई नहीं हो रही है। बिना समाधान के शिकायतें बंद भी की जा रही हैं। लोगों का कहना है कि समाधान से पहले ही शिकायतें बंद कर दी जाती हैं। वर्क इन प्रोग्रेस और कार्रवाई की आवश्यकता नहीं टीप

लिखकर शिकायत जबरन बंद की जा रही हैं। पिपलियाहाना स्थित रहवासी क्षेत्र में गंदगी का अंबार लगा हुआ है। यहां के निवासी अभय बाथम ने बताया कि हम कई बार कर्मचारियों से सफाई को लेकर शिकायत कर चुके हैं लेकिन कोई सुनवाई नहीं होती है। यहां के लोग नगर निगम के एप से भी शिकायत करते हैं लेकिन बिना समाधान के ही शिकायत बंद हो जाती है। क्षेत्र के लोग बताते हैं कि उन्होंने निगम के एप पर कई बार शिकायत की लेकिन बिना समाधान के ही शिकायत बंद हो गई।

सुमित्रा महाजन ने जताई नाराजगी

हाल ही में पूर्व लोकसभा स्पीकर सुमित्रा महाजन ने स्वच्छता को लेकर बैठक ली। उन्होंने इंदौर के आसपास के क्षेत्रों में बढ़ रही गंदगी पर नाराजगी जताई और कहा कि वे बहुत नाराज हैं। बैठक में मंत्री तुलसी सिलावट और सांसद शंकर लालवानी को भी बुलाया गया। ताई ने कहा कि उन्हें यह बैठक सिर्फ इसीलिए लेना पड़ रही है क्योंकि इंदौर स्वच्छता में अपनी पहचान बना चुका है और उसे यह ताज खोना नहीं चाहिए। उन्होंने इंदौर के ग्रामीण क्षेत्रों में बढ़ रही गंदगी पर विशेष जोर दिया था।

इस तरह की शिकायतों की जांच कर रहे हैं- नगर निगम कमिश्नर शिवम वर्मा ने कहा कि हम 311 के माध्यम से मिली शिकायतों पर काम करते हैं। कुछ मामले पता चले हैं जिनमें बिना समाधान के शिकायत बंद कर दी गई है, हम भी जांच कर रहे हैं। यदि आपके पास कोई इस तरह की शिकायत है तो हमें बताइए हम तुरंत समाधान करेंगे। जो भी बिना समाधान के शिकायतों को बंद करेगा उस पर कार्रवाई होगी।

जो मौलवी सियासत या सियासी जमाअत के खिलाफ़, वे इस्लाम व मुसलमानों के दुश्मन

(जावेद आलम)

- पंजाब के शाही इमाम मौलाना उस्मान लुधियानवी से बातचीत

इंदौर। शाही इमाम पंजाब के नाम से मशहूर मौलाना मोहम्मद उस्मान रहमानी लुधियानवी, मजलिस अहरार-इस्लामी हिंद के अध्यक्ष भी हैं। देश को आज़ाद कराने में उनके पुरखों का महती योगदान रहा, जिनमें से एक ने 1857 की जंगे-आजादी में अंग्रेज सरकार के खिलाफ़ फ़तवा जारी किया था। जिसे ब्रिटिश हुक्मरानों के खिलाफ पहला फतवा कहा जाता है। मालवा की माटी के बुलावे पर बीते दिनों वे इंदौर आए। पीथमपुर, इंदौर व देवास में अपने ओजस्वी उद्बोधन से हजारों लोगों की रहनुमाई की। उनसे हुई बातचीत के विशेष अंश =

- **मुल्क का माहौल तो आप देख ही रहे हैं, पंजाब का माहौल कैसा है?**

– पंजाब का माहौल आपसी मुहब्बत व भाईचारे वाला रहा है। सिखों के पहले गुरु नानकदेव को मुसलमान पीर बाबा नानक साहब कहते हैं। सो माहौल ऐसा कम्युनल नहीं हुआ। इसी माहौल को देखते हुए रईसुल्अहरार अव्वल (मौलाना हबीबुर्रहमान लुधियानवी) ने पाकिस्तान नहीं जाने का फ़ैसला किया। तब से यहां सब मिलजुल कर रहते आए हैं।

- **पंजाब में मस्जिद वापसी का सिलसिला कहां तक पहुंचा?**

– आजादी के कुछ दिन बाद से ही मस्जिदों की पुनर्प्राप्ति का सिलसिला शुरू हो चुका था। सन् 1949 में लुधियाना की जामा मस्जिद सबसे पहले वागज़ार कराई। अब तक 2200 मस्जिदें री-स्टोर कराई जा चुकी हैं। क़रीब 500 मस्जिदें नई बनी हैं।

- **मुल्क की मौजूदा सूरते-हाल (परिस्थितियों) को कैसे देखते हैं?**

– मुल्क की सूरते-हाल दो नजरियों से देखी जा सकती है। ऑनलाइन देखो तो हालात बहुत तनावपूर्ण, ऑफ़लाइन उसका 20 फीसदी ही दिखता है। ज़मीन पर ज्यादा नफरत नहीं है। हाल ही लखनऊ, बलरामपुर, सीतापुर जाना हुआ। बलरामपुर की बात है। मेजबान रात में चाय पिलाने ले गए। वहां एक बहुत मशहूर चाय वाला है। आधी रात को भी उसकी दुकान पर भीड़ थी। हिंदू-मुस्लिम सब चाय पी रहे थे। हमें देख वहां खड़े लोगों में से कुछ बंदे बिल अदा करने की जिद करने लगे। हमारे साथी मान नहीं रहे थे। बीच में वह दुकानदार जो हिंदू था, उसने कहा कि मैं पैसे लूंगा ही नहीं, आप लोग क्यों बहस कर रहे हो।

- **हालात जो कुछ भी ख़राब हैं, उनके लिए क्या किया जा सकता है?**

– हमारे नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम की सुन्नत (कथन व कर्म) है न। वह साहिबे-खुल्के-अज़ीम थे। बस शर्त यह है कि इख़्लास (निस्वार्थ) से काम करें। सन् 2019 में कोरोना आया। हबीबुर्रहमान लुधियानवी साहब सानी (द्वितीय) हयात (जीवित) थे। उन्होंने कहा लोग परेशान हैं। हम भी इनकी मदद करेंगे, इन्हें राशन बांटेंगे, मगर लोगों की तरह (दिखावा कर के) नहीं। जैसे नबी हज़रत मुहम्मद सल्ल. बांटते थे, उस तरीके से बांटेंगे।

इसके लिए प्रेस कॉन्फ्रेंस कर फोन नंबर जारी किए गए कि बिना पहचान बताए, बिना फोटो खिंचवाए मदद चाहने वाले पीड़ित व जरूरतमंद इन नंबरों पर राब्ता करें। इमदादी सामान उनके पते तक पहुंचाया जाएगा। रोज़ सात-आठ सौ फ़ोन कॉल्स आती थीं। लुधियाना में 2 फीसदी मुसलमान हैं, सो लगभग सारे फोन दीगर धर्मावलंबियों के होते थे। इन्हें रात में राशन पहुंचाया जाता। क्यों! हमारे नबी सल्ल चाहते हैं कि आपका आत्म-सम्मान, मानवीय गरिमा बरकरार रहे। चैरिटी हज़रत मुहम्मद सल्ल. के तरीके से की जाए तो नफरत खत्म होंगी, आपका दायरा बढ़ेगा। नबी सल्ल. की सुन्नत (तरीके) के मुताबिक चैरिटी करें। इसका ख़याल रखें कि वे रहमतुल्लिल्आलमीन (समस्त संसार के लिए कृपा) थे। साथी क़ौमों के साथ हमदर्दी रखें और भलाई के काम करते रहें। मस्जिदों में डिस्पेंसरियां खोलें, भले छोटे पैमाने पर, मगर खोलें। वहां मुफ्त दवाई दी जाए। कंप्यूटर सेंटर खोलें।

0 **मुल्क की सियासत को मुसलमान कैसे मुतास्सिर कर सकते हैं?**

जब तक आप अपनी सियासी नुमाइंदगी ऐवानों (सदन) में मजबूत नहीं करेंगे, तब तक कोई फायदा होने वाला नहीं है। धरना-प्रदर्शन से भी कुछ नहीं होगा। सोशल लेवल पर बात अलग हो गई, लेकिन राजनीतिक प्रतिनिधित्व बहुत ज़रूरी है। जो लोग सियासत को दीन से अलग समझते हैं, वे गलतफहमी में हैं। जो मौलवी सियासत या सियासी जमाअत के ख़िलाफ़ हैं, वे इस्लाम और मुसलमानों के दुश्मन हैं।

- **मुसलमान अपनी तादाद के लिहाज़ से वर्तमान राजनीतिक परिदृश्य में अपनी जगह कैसे बना सकते हैं?**

– भाजपा ने कितनी सीटों से शुरू किया था? बहुमत आपका नहीं होगा, मगर मुसलमानों की आवाज़ तो बनेगी। आपका वजन बढ़ेगा। हाल ही वक्फ बिल की मुख़ालिफ़त मज़बूत थी, इसलिए वह रोक दिया गया। पूरे मुल्क में सेक्युलर सियासी जमाअते हैं। हमख़याल पार्टियों से इत्तेहाद (गठबंधन) कर के सियासी पार्टी बनाई जा सकती है। अगर मुस्लिम सही अंदाज़ में काम कर जाएं तो वे 70-80 सांसद ला सकते हैं।

- **ओवैसी की पार्टी है तो सही?**

– ओवैसी अच्छा कर रहे हैं, मगर वह यहां रुक गए कि मुसलमान उम्मीदवारों पर ज़्यादा ज़ोर देते हैं। उन्हें अलाइंस करना चाहिए।

- **मुल्क का भविष्य कैसा देखते हैं?**

– हिंदुस्तान में रिवाइवल हो रहा है। वक़्त एक सा नहीं रहता। हिंदुस्तान पर मुगलों ने, अंग्रेजों ने हुकूमत की। फिर वक़्त बदला। सरकारें तो आती-जाती रहती हैं। ख़ुशी की बात है कि मुसलमान सकारात्मक सोच रखते हैं। वे सीख रहे हैं, ढंग से काम कर रहे हैं। अच्छा वक्त आएगा।

- **भाजपा की नफरत भरी सियासत को कैसे देखते हैं?**

– देखिए, हर पार्टी को सत्ता चाहिए, जिसके लिए वह अपने लोगों को ख़ुश करना चाहती है। इसलिए भाजपा के लोग कहीं-न-कहीं इस्लाम व मुसलमानों को बार-बार हिट करते हैं।

- **देश के बहुसंख्यकों से क्या कहना चाहेंगे?**

– बहुसंख्यकों के लिए पैग़ाम यही है कि इस्लाम संपूर्ण जीवनचर्या है, शैली है। इसे उसी शक्ल में देखना व समझना चाहिए। उसके बारे में जानना चाहिए। आपसी नफ़रत से किसी का भला नहीं हुआ है, इसका ख़याल रखें।

लोक से प्रभावित 'भाषा' और भाषा के प्रभाव में 'लोक'

लोक साहित्य

डॉ.कारुलाल जमड़ा 'कारुण्य'
लेखक लोकभाषा शोधकर्ता हैं।

जनजाति बोलियो में लोक एवं लोक व्यवहारों पर चिरकाल से ऐसे कई शब्द है जिनको तोड़कर प्राकृत एवं राजस्थानी शब्दों के सम्मिश्रण से नए शब्दों की उत्पत्ति की जाती थी और इन शब्दों का प्रयोग राजघरानों में एक तरह की कूटभाषा जिसे 'गुरवि' कहा जाता है,में होता था। यह कूटभाषा राजे-रजवाड़ों में गुप्त रूप से केवल उन्हीं लोगों के द्वारा प्रयोग में लाई जाती थी जो कि राज-दरबार से, खासकर राजा से बहुत गहरी निकटता रहते थे।इन शब्दों को मुख्यतः दमामी,भाट,गुरव, चारण,नगारची और केशकार जैसे समाज विशेष के लोगो द्वार प्रयोग किया जाता था। राजस्थानी भाषा में लिखे गए ग्रंथों में इतिहासकारों ने इस तरह की भाषा का राज-दरबार में गुप्त रूप से प्रयोग होने को स्वीकारा भी है और संक्षिप्त वर्णन भी किया है परंतु जिस तरह की कूटभाषा का प्रयोग इन दरबारों और राज परकोटे में किया जाता था, वह कहाँ से उत्पन्न हुई और उन शब्दों की व्युत्पत्ति किन भाषाओं के मिश्रण से हुई, इस संबंध में कोई भी प्रामाणिक साहित्य अभी तक किसी लेखक, इतिहासविद अथवा भाषाविद द्वारा द्वारा नहीं दिया गया है।

राजस्थान के लगभग सभी क्षेत्रों में स्थित रजवाड़ों विशेषकर हाड़ौती मेवाड़,मारवाड़ और वागड़ क्षेत्र से लेकर दूर-सुदूरवर्ती क्षेत्रों में प्रयुक्त होने वाली इस कूटभाषा 'गुरवि' के कोई लिखित प्रमाणिक साक्ष्य मौजूद भी नहीं है। परंतु सत्रहवीं से लेकर उन्नीसवीं सदी तक कूटभाषा के रुप में इसका विस्तार गुजरात,दिल्ली और कश्मीर तक होने के प्रमाण मिलते हैं तो मुग़ल शासनकाल में अरबी और फारसी के शब्दों के साथ भी इनका सम्मिश्रण भी दिखाई देता है जिसका व्यवहार में प्रभाव भारत सहित अफगानिस्तान,अरब और यूनान तक था।यद्यपि इसका प्रयोग कुछ वर्ग-विशेष के लोगों के द्वारा किया जाता था और उन लोगों की जातियों और परिवारों में धीरे-धीरे ये शब्द प्रचलित से हो गए थे।

जनजातीय शब्दावली,राजस्थानी और प्राकृत तथा फारसी भाषाओं के योग से बनाए गए ये नए शब्द और वाक्यांश सामान्य व्यवहार के साथ ही दरबार हाल से लेकर रनिवास में अत्यंत महत्वपूर्ण और बेहद गंभीर आंतरिक मामलों में भी प्रयोग किए जाते थे।सामान्य दिनों से लेकर शासन के लिए विकट संकटकालीन परिस्थितियों तक प्रयुक्त में लाए जाने वाले इन शब्दों का उद्भव विभिन्न तरह की लोक-भाषाओं के विशेष शब्दों के मिश्रण से,एक-एक अक्षर को जोड़कर उन्हें कूट के रुप में प्रयोग किया जाता था।इनमें आदिम, जनजाति शब्दों की बहुलता रहती थी। उदाहरण के लिए राज-परिजन, उनके निकटस्थ लोग किसी सामान्य महिला के लिए ÷ऐणकि÷ शब्द का प्रयोग करते थे।यहाँ इस शब्द में आए अक्षरों में जनजातीय भाषा से 'ऐ' प्राकृत से 'ण' और 'कि' शब्द राजस्थानी लोक भाषा से विशेष सन्दर्भ में प्रयुक्त था। इसी प्रकार विशेष महिला चाहे वह किसी भी आयु की हो उसके लिए एक 'बेटी' को दिए जाने वाले सम्मान को ध्यान में रखते हुए 'बेटी' के स्थान पर ही सार्वभौमिकता लिए 'टेबी' शब्द का प्रयोग होता था।यहाँ इस जगह दोनों शब्दों के मध्य में एक तरह से स्पष्ट अंतर परिलक्षित होता है।

ठीक इसी प्रकार से किसी एक स्थान से किसी विशेष कारण से अथवा भय और चेतावनी के फलस्वरुप वहाँ से तत्काल हट जाने के लिए 'निवड़' शब्द का प्रयोग किया जाता था। यहाँ 'नि' क्रमशः जनजाति शब्दावली से 'व' प्राकृत से और 'ड़' राजस्थानी से प्रयोग में लिया जाता था,जो कालांतर में 'न' के रुप में व्यवहृत हुआ। किसी स्वजन को कोई बात कहने से रोकने के लिए अथवा उसे किसी से सावधान रहने का संकेत देने के लिए 'ऐदई' शब्द का प्रयोग होता था। यह शब्द भी क्रमशः राजस्थानी और वागड़

(जनजातीय शब्दावली) बोली के मिश्रण से बना है।

'टेबी' शब्द के विपरित पुरुष के लिए क्रमशः 'टेबा' और 'ऐणकि' के विपरित पुरुष के लिए 'ऐणका' शब्द का प्रयोग गुप्त रूप से किया जाता था। ये शब्द थोड़ी संख्या में नहीं थे अपितु राजघराने के आसपास के निवासियों के लिए एक पूरी की पूरी कूटभाषा का निर्माण करते थे जो राजपरिवार के बेहद निकटस्थ लोगों के भाषिक और वाचिक कोष से निकलकर संबंधित जातियों के लोगों,उनके परिवारों और उनके समाज में जहाँ-जहाँ तक वे निवास करते थे में न केवल फैल गई थी बल्कि उनके संस्कारों में घुल चुकी थी। हालांकि इसका प्रयोग उन्हें बड़ी सावधानी से करना होता था द्यइसी प्रकार से किसी व्यक्ति विशेष के बच्चें के विषय में गुप्त रूप से संबोधित करने के लिए 'टूलरा' शब्द का प्रयोग होता था और कही जाने वाली बात केवल दो लोगों तक ही सीमित रहती थी। इसी प्रकार डरने या भयभीत हो जाने के लिए 'गदप' शब्द का प्रयोग किया था।

इस शब्द की व्युत्पत्ति भी जनजाति, राजस्थानी और फारसी के सम्मिश्रण से ही हुई है। इस कूटभाषा को संबंधित लोग 'गुरवि' कहते थे जिसका जिक्र राजस्थानी,गुजराती और मालवा के कुछ विद्वानों ने आंशिक रूप से अपने ग्रंथों में किया हैं परंतु उसका विस्तृत रूप से विश्लेषण या एक प्रकार से कोई विशेष या अलग वर्णन समकालीन कवियों,लेखकों अथवा इतिहासकार के परिचय ग्रंथों में हमें प्राप्त नहीं होता है।अठारहवीं सदी तक इस सन्दर्भित कूटभाषा के लगभग एक हज़ार शब्द प्रचलित थे।

इस तरह लोकभाषा और लोक व्यवहार में जनजाति शब्दावली का कई विभिन्न तरीकों से प्रयोग हुआ। 'भाषा' लोक से प्रभावित हुई और 'लोक' भाषा से। जिस प्रकार से जनजाति के शब्द दूसरी लोक भाषाओं में हैं,उसी प्रकार दूसरी लोक भाषाओं के शब्द जनजाति में समाहित हो गए हैं।

दूर-सुदूर क्षेत्र में ही व्यवहृत होने के बावजूद इस जनजातीय शब्दावली का प्रवाह समाज की मुख्यधारा में होना और राज परिजन के बीच से होते हुए सिद्ध राज दरबार तक पहुंचना और सेना में भी अपना एक विशेष स्थान बना लेना और राजा के विश्वास पात्र लोगों तक पैंठ जाना इसकी गुढ़ स्वीकार्यता के महत्व को रेखांकित करता है।

जिन जनजाति स्वजन के माध्यम से जनजाति शब्दों की पहुंच राज दरबार में सम्मिलित कवियों, चारणों और कुछ विशेष विश्वासपात्र लोग और अलग-अलग भाषाओं के जानकार तक हुई और एक विशिष्ट कूटभाषा के जन्म का कारण बनी,उनकी सांस्कृतिक और भाषायी विरासत को सीमित आंकना एक तरह से स्वयं की जानकारी को अल्प सीमित रखने जैसा है।लोक की तमाम सांस्कृतिक और भाषायी व्यवस्था कहीं ना कहीं जनजाति प्रभाव से युक्त लगती है। लोकभाषा और जनजातीय शब्दावली पर अभी बहुत कुछ किया जाना शेष है।

स्मृति शेष

सबसे अच्छी मेरी अम्मा

विजय जोशी
पूर्व ग्रुप महाप्रबंधक, भेल

भिनसारे ही दूध चढ़ाकर
मुझको सदा जगातीं अम्मा।

जाड़े की कंपती रातों में
उठ उठ मुझे उढ़ातीं अम्मा।

थककर जब भी घर मैं लौटा
रही मुझे सहलातीं अम्मा।

पापा से जब रूठ गया मैं
मुझे सदा समझातीं अम्मा।

घर में कितनी भी तंगी हो
सब कुछ रही दिलातीं अम्मा।

दुख में जब आंसू भर आए
कांधे पर दुलरातीं अम्मा।

मैडल जब भी कोई लाया
सबको रही दिखातीं अम्मा।

जब जब जीता जीवन की जंग
मेरा परचम लहरातीं अम्मा।

दुनिया की सारी फितरत से
मुझको रही बचातीं अम्मा।

घर से जब भी बाहर निकला
याद बहुत तुम आतीं अम्मा।

अपने घर की फुलवारी में
सबसे अधिक सुहातीं अम्मा।

पुण्य सलिला गंगा जैसी
मुझे बहुत तुम भातीं अम्मा।

सुबह सवेरे मीडिया एल. एल. पी. के लिए उमेश त्रिवेदी द्वारा पी. जी. इंफ्रास्ट्रक्चर एण्ड सर्विसेस प्रा.लि., राउखेड़ी, देवासरोड, इंदौर से मुद्रित एवं 662, साईंकृपा कॉलोनी, बॉम्बे हॉस्पिटल के सामने, इंदौर से प्रकाशित।

प्रधान संपादक-उमेश त्रिवेदी
संपादक(म.प्र.)-गिरीश उपाध्याय
वरिष्ठ संपादक-अजय बोकिल
स्थानीय संपादक-हेमंत पाल
प्रबंध संपादक-अरुण पटेल

(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र इंदौर रहेगा)
RNINo.MPHIN/2015/66040,
MobileNo.:09893032101
Email-subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

लघुकथा

चुभन

सुरेश सौरभ

आरती नीचे बैठक में, सीढ़ी से उतरने हुए आयी। ''अच्छा! आप दोनों लोग आए हैं। ''लाइए दिखाइए अपनी-अपनी कविताएँ।'

दोनों की कविताएँ लेकर देखने लगी। कुछ देर बाद आरती बोली- हाँ हाँ एक की काम की लग रहीं हैं, विनोद जी की! ''जी जी मैम।' विनोद जी की आँखें खुशी से चमक उठीं।, ''और हाँ आप की महेश जी।'' महेश जी थोड़ा भय-विस्मय से उचके ।

अनमने से महेश से बोली, ''महेश जी! आप की कविताएँ मेरे पल्ले बिलकुल नहीं पड़ी, आजकल भला नये मॉडल की कवयित्रियाँ ऐसी पुराने मॉडल वाली कविताएँ कहाँ पढ़तीं हैं। आप जाइए, फिर कभी दूसरी मेरे तेवर वाली कविताएँ लेकर आइएगा।''

महेश जी इज्जत से उठकर चले गये।

''लीजिए-लीजिए विनोद जी आप ने नाश्ता-वाश्ता नहीं लिया।'' अपने बीच में टेबिल पर रखे नाश्ते की ओर इशारा करके।

ले लिया मैम जी।''

अरे! और लीजिए आपसे अभी बहुत काम हैं।÷ विनोद जी नाश्ता टूंगने लगे।

'आप की दो लंबी कविताएँ ले रही हूँ। यही मेरे काम की लग रही हैं, ऐसी वीरगाथा वाली, इतिहास के गौरव गान वाली और धर्म ध्वजा फहराने वाली कविताओं की मुझे किसी शिद्दत से तलाश रहती है। वाकई आप मेरा तेवर समझते हैं, आप को इन कविताओं का पेमेंट किये देती हूँ, कहीं इन्हें आप ने पढ़ा तो नहीं, कहीं छापा तो नहीं?

नहीं नहीं मैम जी! बिलकुल नहीं, इसीलिए तो आप के पास दोनों लेकर यहाँ आया हूँ।''.

''हूँ हूँ..ऽऽऽ ठीक है। ये लो पूरे पाँच हज़ार और आज के बाद इन कविताओं को ऐसे भूल जाओ, जैसे चुनाव में बाद विदेश से, काला धन वापिस लाने का पक्का वादा करने वाले नेता, चुनाव जीतने के बाद काला धन वापिस लाना बिलकुल भूल चुके हैं।

कँपकँपातो हाथों से विनोद ने रुपये थामते हुए भरभराते स्वर में बस इतना बोल पाये- जी मैम जी! पुराना भरोसा बनाए रखें, आप को मुझसे आगे काम है और मुझे भी आप से बहुत काम पड़ेगा।''

ठीक है, जाओ! अब विनोद जी।'' फिर मैडम ने बैठक से तेज आवाज लगाई। ''शोभित अरे ओ शोभित! ड्राइवर शोभित प्रकट हुआ। एअरपोर्ट जाना है, सारी पैकिंग हो चुकी है, जा गाडी में मेरा सारा सामान रख। मैं तैयार हो रहीं हूँ। मुझे फौरन निकलना है, कल दुबई में काव्य पाठ है मेरा।

जी मैम जी।'' ड्राइवर मैम की सेवादारी में लग गया। अब मैडम ड्राइंग रूम की ओर जा रही थीं, विनोद जी की कविताएँ गुनगुनाते हुए हुए।

विनोद जी, उनकी बड़ी कोठी के लॉन से, बाहर गेट पर आ चुके थे। अपनी साइकिल का ताला खोला और अब उनकी डगमगाती साइकिल चल पड़ी। घर पहुँचे। पत्नी को रुपये पकड़ाते हुए बोले- ''घर में जो राशन-पानी कम हो मँगवा लेना।

रुपये गिनते हुए पत्नी विस्मय से बोली-''अरे! इतने सारे रुपये इतनी जल्दी कहाँ से ले आए?''

'आम खाओ! गुठली गिनने से मतलब न रखो?''

''क्यों ? क्यों क्यों न मतलब रखूँ? आखिर तुम्हारी पत्नी हूँ। इतना तो हक मेरा बनता है?

बिलकुल बनता है, पर हर बात तुम्हें बताऊँ यह जरूरी नहीं।''

'क्यों क्यों क्योंऽऽऽ....''

'तुम्हारे इस क्यों का मेरे पास कोई जवाब नहीं? बस कुछ न पूछो तो अच्छा है।'' गला रूंध गया विनोद जी का और उनकी आँखें भी डबडबा आयीं। कुर्सी में धंसते हुए बोले- विपन्नता क्या न कराए..कहीं पक्की नौकरी में होते तो आज यह दिन न देखना पड़ता..आँखें रिसने लगीं उनकीं। पत्नी भी पल्लू से अपनी आँखों की कोरों को पोंछने लगी।

'अब न पूछूँगी, सुबह झोले में कुछ कागज रखते हुए, मैंने आप को देखा था। अर्धांगिनी हूँ आप की, कुछ बताओ या न बताओ, पर मैं तुम्हारे बिना बताए ही, बहुत कुछ जान लेती हूँ। समझ लेती हूँ। मैंने तो बस यूँ ही पूछ लिया था, क्योंकि दिल में कुछ चुभ सा रहा था।

विनोद-चुभन तो मेरे भी मन में और हृदय में थी, पर इस चुभन से बड़ी चुभन पेट की थी, जिसकी आवाज सुननी ही पड़ी।

पुस्तक समीक्षा

मालिनी गौतम
समीक्षक

समय की पीठ पर लिखा गया सामाजिक सरोकार

वरिष्ठ कवि राजेश्वर वशिष्ठ किसी परिचय के मोहताज नहीं हैं। गहन अध्ययन एवं निरंतर साहित्य साधना के द्वारा उन्होंने कविता में अपना स्वयं का मुहावरा अर्जित किया है जिसे उनके नए कविता संग्रह 'प्रजातंत्र में कबूतर' में भी भलीभाँति देखा जा सकता है। 'गोमती से गपशप', 'निर्मल हृदय', 'प्रजातंत्र में कबूतर', 'सुनेत्रा! तुम ही वसंत हो' और 'इस वेलेंटाइन डे पर' इन पाँच खंडों में बँटा यह संग्रह अपने कथ्य, भाव, भाषा और शिल्प के अनूठेपन से किसी भी पाठक को समृद्ध करेगा।

इस संग्रह में नदियाँ, पेड़, पहाड़, चिड़िया या पात्र अपने स्थूल स्वरूप में नहीं आते बल्कि वे साक्षी होते हैं मानवीय सभ्यता के बनने व नष्ट होने के। गोमती हो या ताप्ती, गंगा हो या हुगली, यमुना हो या फिर चन्द्रभागा ये तमाम नदियाँ अपने संवादों के मध्य एक स्त्री के संवेदनशील मन को परत दर परत उस गहराई तक उघाड़ती हैं जहाँ पहुँचना एक सामान्य व्यक्ति के बस की बात नहीं है। स्त्री मन की गहराई में उतरकर उसकी थाह लेने में राजेश वशिष्ठ का कोई सानी नहीं है।निर्मल हृदय खण्ड की कविताएँ पाठक को एक ऐसे शहर कोलकाता की यात्रा कराती हैं जिसका साहित्यिक, सांस्कृतिक और धार्मिक वैभव इतिहास के पन्नों में स्वर्णिम अक्षरों में दर्ज है। बदलते परिवेश में एक शहर कैसे बदलता है, लोग कैसे बदलते हैं, धर्म और आस्थाएँ कैसे रूप परिवर्तित करती हैं यह भी तो दर्ज होता है इन कविताओं में। हावड़ा ब्रिज, विक्टोरियल मेमोरियल, कोलकाता का हृदय कही जाने वाली ट्राम, काली घाट का मंदिर, प्रिंसेप मेमोरियलको देखते-निहारते डायमंड हार्बर से आए जहाजों के हूटर सुनते पाठक हौले-हौले महसूस करता है कोलकाता की नब्ज़ को।

ये कविताएँ केवल व्यक्तिगत अनुभवों का संग्रह नहीं हैं, बल्कि ये एक गहरे सामाजिक चिंतन को भी उजागर करती हैं और हमारे समय की वास्तविकता को प्रतिबिंबित करती हैं। इन कविताओं में आज के सामाजिक और राजनीतिक परिदृश्य का न सिर्फ गहन विश्लेषण है बल्कि ये कविताएँ हमारे संकुचित होते जा रहे हैं मन पर कटाक्ष करते हुए उसे झकझोरने का प्रयास करती हैं और सफल भी होती हैं।

इन कविताओं में नदी, समुद्र, पेड़, चिड़िया, कवि और कविप्रिया सुनेत्रा के आत्मीय संवादों के माध्यम से हम अनेक प्रश्नों से उलझते हैं, कहीं उनके समाधान पाते हैं तो कहीं समाधान की दिशा में सोचने को मजबूर होते हैं। राजेश्वर वशिष्ठ की ये कविताएँ उनके मौलिक विचारों और अद्वितीय शैली का सुंदर समायोजन हैं। वे

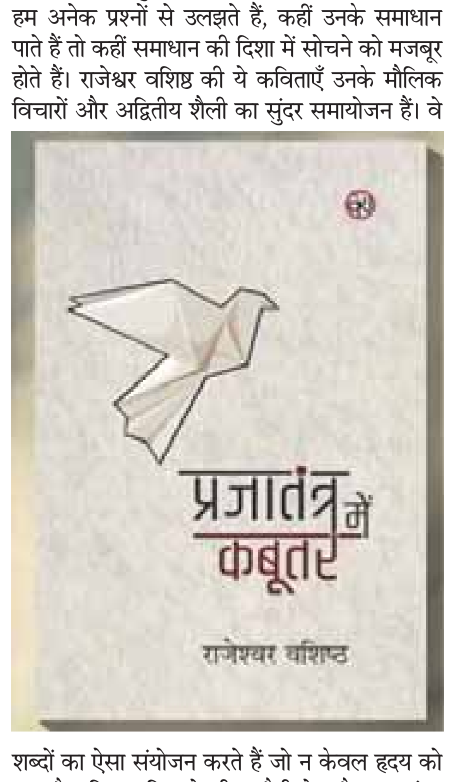

शब्दों का ऐसा संयोजन करते हैं जो न केवल हृदय को छूता है बल्कि बुद्धि को भी चुनौती देता है। यह संग्रह पाठक को एक गहन यात्रा पर ले जाता है जहाँ वह अपने विचारों भावनाओं और अनुभवों के साथ खुद को पुनः खोजता है। प्रजातंत्र में कबूतर एक अनिवार्य पठन है जो न केवल काव्य प्रेमियों के लिए बल्कि समाज में बदलाव की आकांक्षा रखने वाले सभी सजग पाठकों के लिए प्रेरणा स्त्रोत बनेगा।

पुस्तक-प्रजातंत्र में कबूतर
लेखक-राजेश्वर वशिष्ठ
प्रकाशक- वेरा प्रकाशन, जयपुर

लघुकथा

सोपान दर सोपान

रमेश रंजन त्रिपाठी

वह और दादा केरल के कालड़ी शहर में आदि शंकराचार्य के स्तूप मंदिर में पहुँचकर ठिठक गए। दोनों सीनियर सिटीजन थे और स्तूप डेढ़ सौ फीट ऊंचा था। स्तूप के बीच में जमीन-तल पर पादुका मंदिर था और वहीं बगल से टॉवर में ऊपर तक चढ़ने के लिए सीढ़ियाँ बनी थीं। उन्होंने पादुका मंदिर में दर्शन किए और स्तूप में पांच-सात जितनी हो सकें सीढ़ियाँ चढ़ने का मन बना लिया। दोनों ने सीढ़ियों पर चढ़ना शुरू किया। तीन सीढ़ियों के बाद एक छोटा सा प्लेटफार्म था और वहीं दीवार पर उकेरी गई मूर्तियों और लेख के जरिए आदि शंकराचार्य के जीवन वृत्तांत को समझाना शुरू किया गया था।

भित्तिचित्र से दोनों की रुचि बढ़ी। आगे की कथा जानने के लिए दोनों फिर तीन सीढ़ियाँ चढ़े और अगले चित्र को देखने लगे। यह सिलसिला शुरू हुआ तो दोनों की कहानी के प्रति उत्सुकता बढ़ी, आनंद आने लगा। वे धीरे-धीरे सोपान दर सोपान आदिशंकर की जीवनी पढ़ने लगे। आदि शंकराचार्य के जन्म से लेकर केवल बत्तीस वर्षों के उनके जीवनकाल के विषय में इसी प्रकार लेख के साथ मूर्तियां उकेरी गई थीं। दोनों उन्हें देखते और पढ़ते हुए सीढ़ियाँ चढ़ते गए। उन्हें थकान का एहसास ही नहीं हुआ। वे शीर्ष तक जा पहुँचे। सबसे ऊपर की मंजिल पर आदि शंकराचार्य की जीवनी को विराम मिला।

दोनों चकित थे। वह बोला- 'ऐसा कमाल कैसे हो गया? हमारे जैसे शारिरिक रूप से कमजोर भी चढ़कर ऊपर तक आ कैसे गए?'

'पढ़ाई करते हुए आप किसी भी ऊँचाई तक पहुँच सकते हैं!' दादा की मुस्कराहट में नीति शास्त्र का पूरा अध्याय छिपा हुआ था।

लघुकथा

दु:स्वप्न

रामेश्वरम तिवारी

आदरणीय वर्मा जी की उम्र इस समय उनकी जन्म-पत्री के अनुसार चौरासी के आसपास है। उनके कथनानुसार देश-विभाजन के समय उनकी उम्र यही कोई सात-आठ साल की रही होगी और उस समय उनके पिताजी की तैनाती रेवेन्यू ऑफ़िसर के रूप में भारत-पाकिस्तान की सीमा-रेखा पर थी।

सर्दी के दिनों में वर्मा जी रोजाना सुबह नाश्ते के बाद लगभग दस बजे और दोपहर भोजन के बाद दो बजे एकाध घंटे के लिए अपने घर के सामने स्थित हरे-भरे गार्डन में धूप सेंकने के निमित्त आकर बैठ ज़ाया करते हैं। वर्मा जी उम्र से जरूर बुजुर्ग हो चुके हैं, पर अभी तक उनका स्मृति-भंजन नहीं हुआ है।

अवकाश के दिनों में, फ़ुरसत के लम्हों में कभी-कभार मैं भी वर्मा जी के जीवनानुभव सुनने के उद्देश्य से उनके पास जाकर बैठ जाया करता हूँ। मैंने देखा कि एक दिन उनकी चिंता दुनिया में रूस, यूक्रेन, इज़राइल, मिडिल ईस्ट के फ़िलीपींस, लेबनान, सीरिया आदि देशों के बीच हो रहे विनाशकारी युद्ध से होते हुए पड़ोसी देश बंगला में हिंदुओं पर हो रहे अत्याचार और देश में बढ़ते हुए मंदिर-मस्जिद के विवाद तक आ पहुँची।

तभी वर्मा जी अपनी स्मृति पर ज़ोर देते हुए, अतीत के अँधेरे में प्रवेश करते हुए बोले- मित्र! मैंने देश-विभाजन की त्रासदी को अपनी आँखों से देखा है। उस समय अलग देश की माँग को लेकर कैसे गंगा-जमुनी संस्कृति और भाईचारे का दंभ, दावा और दुहाई देने वाले हिंदू-मुस्लिम एक-दूसरे को गाजर-मूली की तरह काट रहे थे। सात-आठ साल की उम्र होने के बावजूद वह विनाशक त्रासदी का दौर मुझे आज भी अच्छी तरह से याद हैं। वो, तो अच्छा हुआ कि पिता जी ने हम भाई-बहनों और माँ को समय रहते किसी तरह से हत्यारों की नज़र से बचाकर जैसे-तैसे छुपते-छिपाते बस में बिठाकर दादा-दादी के पास बरनाला भिजवा दिया था, वरना हम भी और लोगों की तरह काल की कब्र में कहीं दफन होते। आज भी वह खूनी मंजर रह-रहकर आँखों में तैरता रहता है। लाख भुलाने की कोशिश की, पर भूलता ही नहीं है।'

वर्मा जी थोड़ी देर के लिए मौन हुए। गहरे तक लम्बी साँस खींची, अपना सिर ऊपर उठाया, शून्य में ताक-झाँक की, तपते हुए सूरज को ताका और दम साधकर मौजूदा माहौल पर अफ़सोस ज़ाहिर करते हुए बोले- 'पता नहीं मुझे क्यों ऐसा लग रहा है कि आगामी दिनों में बादलों से तेज़ाब की बरसात होने वाली है, धरती रक्तरंजित होने वाली है। और ''सारे जहां से अच्छा हिंदोस्ताँ हमारा'' एक बार फिर सन सैंतालीस की विभीषिका की ओर अग्रसर होता हुआ दिखाई दे रहा है।' तभी मैंने आँखें बंद की और ईश्वर से प्रार्थना की कि उनकी यह आशंका मात्र दुःस्वप्न साबित हो।

जन्मदिन विशेष

चित्रा माली

सहायक प्रोफेसर गांधी एवं शांति अध्ययन विभाग महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय क्षेत्रीय केंद्र,कोलकाता

यथार्थवादी सिनेमा के फिल्ममेकर श्याम बेनेगल

सिनेमा संप्रेषण का सबसे सशक्त माध्यम है। इस संप्रेषण में बहुत कुछ कहा जाता है और उससे भी अधिक संकेतों में लोगों तक संप्रेषित किया जाता है। जिस प्रकार से फिल्म निर्माण के सभी पक्ष जैसे पटकथा,निर्देशन,अभिनय,गीत,संगीत तथा फिल्म से जुड़े कई आयाम कला की श्रेणी में आते हैं उसी प्रकार फिल्मों को देखना और समझना भी एक कला है। कई लोगों का तर्क हो सकता है कि फिल्म मनोरंजन का साधन है और इसके लिए कोई अतिरिक्त काबिलियत को विकसित करने की कोई आवश्यकता नहीं है। फिल्म में हम उस दुनिया को देखना चाहते हैं जहां हर चीज़ परफेक्ट हो,साथ ही सही समय पर हो और यथार्थ की जद्दोजहद से बिल्कुल मुक्त हो। फिल्म परंपरा,आधुनिकता, पूरब - पश्चिम,सामाजिक रवायतों और निजी चाहतों को पूरी जटिलता के साथ दर्शाती है,पर इतने हल्के हाथ से चित्रित करती है कि गंभीर प्रश्न गंभीर नहीं मालूम होते। फिल्म समाज को आईना दिखाती है पर इस तरह कि जो देखना चाहे अपना असली चेहरा देख ले और जो अनदेखा करना चाहे वो इसे नाच - गाने का आयोजन समझकर खुश हो लें। यह एक अच्छे निर्देशक और सिनेमा से जुड़े विभिन्न किरदारों के कौशल पर निर्भर करता है कि वे समाज के यथार्थ को कैसे अधिक लोगों तक संप्रेषित करते हैं। भारत में सिनेमा के दो प्रकार प्रचलित हैं पहला लोकप्रिय सिनेमा और दूसरा कला सिनेमा। कला सिनेमा जिसे हम आर्ट या प्रति सिनेमा,समानांतर सिनेमा,वैकल्पिक सिनेमा भी कहते है जो यथार्थवादी तथा कम बजट की फिल्मों का निर्माण करने वाला सिनेमा है यह समानांतर सिनेमा भी है जो लोकप्रिय सिनेमा की धारा के विपरित छोटे,मंझोले बजट और अच्छी फिल्मों की प्रतिज्ञा से बंधे हुए हैं। बीसवीं सदी के दूसरे दशक में यूरोप की प्रयोगधर्मी फिल्मों को भी कला सिनेमा की संज्ञा दी गई थी। इन्हें बनाने में फिल्म माध्यम के गंभीर अध्येताओं,समीक्षकों और लेखकों की प्रमुख भूमिका थी। सिनेमा का यह रूप फ्रांसीसी अवांगार्द आंदोलन के व्यवस्था विरोधी तेवर से काफी प्रभावित हुआ। ये सिनेमेकर्स परंपरा से विद्रोह को मूल्य के रूप में ग्रहण करते हैं। कला सिनेमा की इस लहर ने सारी दुनिया में फिल्मकारों की एक नई पीढ़ी को जन्म दिया। कला सिनेमा,समानांतर सिनेमा और नए सिनेमा में लोकप्रिय सिनेमा से अलग काम करने वालों के समूह थे। भारत में कला सिनेमा, समानांतर सिनेमा को स्थापित करने में श्याम बेनेगल ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। 1973 में श्याम बेनेगल की फिल्म 'अंकुर' ने तहलका मचा दिया जिससे लोकप्रिय सिनेमा को आघात लगा। कला सिनेमा की लोकप्रियता से कला प्रेमी पूंजीवादी कला सिनेमा पर पूंजी लगाने के लिए तैयार हुए और महत्वपूर्ण फिल्मों का निर्माण भी इस दौर में हुआ। इसे 'न्यू इंडिया सिनेमा' भी कहा जाता है। श्याम बेनेगल,सत्यजीत रे से काफी प्रभावित थे उसी प्रभाव के चलते उन्होंने फिल्म निर्माण के क्षेत्र में कदम रखा। यह भी कहा जाता है कि श्याम बेनेगल ने सत्यजीत रे की विरासत को आज भी संभाले रखा है। श्याम बेनेगल ने अपने केरियर की शुरुआत एडवरटाइजिंग इंडस्ट्री से की थी। वे मुंबई की लिटांस विज्ञापन एजेंसी में कॉपीराइटर थे। श्याम बेनेगल ने 900 से अधिक डॉक्यूमेंट्री और विज्ञापन फिल्मों का निर्देशन किया है। इसके अतिरिक्त फिल्म एंड टेलीविजन इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया (FTII) पुणे में अध्यापन का कार्य किया है और इसी संस्थान के दो बार अध्यक्ष भी

रहे है। 'अंकुर' फिल्म से श्याम बेनेगल को एक अलग पहचान और प्रसिद्धि मिली। इस फिल्म की कामयाबी के बाद लगातार कई और फिल्मों में उनके द्वारा ज्वलंत मुद्दों और सामाजिक,आर्थिक,राजनीतिक,सांस्कृतिक विसंगतियों को दर्शाती हुई फिल्मों का निर्देशन किया गया है। इन फिल्मों में 'निशांत', 'भूमिका', 'मंडी', 'मंथन', 'समरआरोहण', 'सूरज का सातवां घोड़ा', 'जुबैदा', 'सरदारी बेगम', 'अनवरत', 'वेलडन अब्बा', 'वेलकम टू सज्जनपुर' और भी कई फिल्में हैं। श्याम बेनेगल की फिल्मों में प्रतिरोध की संस्कृति के साथ साथ स्त्री प्रतिरोध के स्वरों को भी देखा जा सकता है। श्याम बेनेगल ने अपनी फिल्मों में स्त्री पात्रों को स्वतंत्र अस्तित्व, सशक्त और अपने अधिकारों के लिए संघर्षरत दिखाया है। 'मेकिंग ऑफ महात्मा' की कस्तूरबा की तुलना में 'गांधी' फिल्म की कस्तूरबा अत्यंत सशक्त और प्रतिरोधी दिखाई देती है। श्याम बेनेगल की फिल्मों के माध्यम से उनके संवेदनशील व्यक्तित्व को,स्त्रियों के प्रति सम्मान को और समाज में व्याप्त रूढ़ियों को तोड़ने की प्रतिबद्धता को देखा जा सकता है। श्याम बेनेगल की फ़िल्म 'मंथन' के लिए पांच लाख किसानों ने दो - दो रुपए का चंदा इकट्ठा कर कर दिया था। फिल्म को देखने के लिए सिनेमाघर में किसान ट्रकों में भरकर आते थे। सामाजिक सरोकारों और मुद्दों पर आधारित फिल्मों के निर्माण के आर्थिक पक्ष के लिए श्याम बेनेगल ने दूरदर्शन के लिए धारावाहिक 'यात्रा' 'कथा सागर' और 'भारत एक खोज' का निर्देशन कार्य भी किया,साथ ही वृत्तचित्रों के माध्यम से भी संप्रेषण का कार्य किया। श्याम बेनेगल ने कला सिनेमा की विधा में परिवर्तन भी किए क्योंकि पूंजी का मुकाबला बलपूर्वक नहीं किया जा सकता है। इन पूंजीवादी साधनों का इस्तेमाल किस प्रकार से अपने पक्ष में किया जाए यह महवपूर्ण है और इन संसाधनों का भरपूर इस्तेमाल श्याम बेनेगल अपनी फिल्म 'जुबैदा', 'वेलडन अब्बा' और 'वेलकम टू सज्जनपुर' में करते हैं हालांकि इन्हें लोकप्रिय/कमर्शियल फिल्मों में रखा गया जो बॉक्स ऑफिस पर भी कामयाब भी रही लेकिन इन फिल्मों में कला फिल्मों की प्रतिबद्धता को भी देखा जा सकता है जो यथार्थपरक सामाजिक सरोकारों से जुड़ी हुई हैं। 'भारत एक खोज',भारतीय संविधान की निर्माण यात्रा 'संविधान' धारावाहिक,'मेकिंग ऑफ महात्मा', 'नेताजी सुभाष चंद्र बोस~ द फॉरगटन हीरो' और सत्यजीत रे की जीवनी पर बनाई गई फिल्म की कलात्मकता उन्हें अन्य सिनेमेकर्स से अगल श्रेणी में स्थापित करती है। आपको पद्म श्री,पद्म भूषण,दादा साहेब फाल्के पुरस्कार और वी.शांताराम लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड से भी नवाजा जा चुका है। इसके अतिरिक्त हिंदी में सर्वश्रेष्ठ फीचर फिल्म के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार से सात बार सम्मानित भी किया गया है। राष्ट्रीय एकता पर सर्वश्रेष्ठ फीचर फिल्म 'नेताजी सुभाष चंद्र बोस~ द फॉरगटन हीरो' के लिए नरगिस दत्त पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। इनके साथ ही कई अंतरराष्ट्रीय पुरस्कारों से भी श्याम बेनेगल को सम्मानित किया गया है। श्याम बेनेगल की कल्पनाशीलता,दूरदर्शिता और संवेदनशीलता हमें उनका कायल बनाती हैं साथ ही सामाजिक चेतना और सरोकारों के लिए प्रतिरोध की संस्कृति को बचाए व बनाए रखने के लिए वे हमें प्रेरित भी करते हैं। आज श्याम बेनेगल का जन्मदिन है उन्हें जन्मदिन की बहुत बहुत बधाई और शुभकामनाएं इस उम्मीद के साथ की वे अपनी फिल्मों के माध्यम से हमें लगातार यथार्थ से रूबरू करवाते रहेंगे।

दोस्त करीब... दुश्मन और करीब!

❐ यूके से प्रज्ञा मिश्रा

फिल्म **डॉक्यूमेंट्री 'द बीबी फाइल्स'** में इजरायली प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू को भ्रष्टाचार के मामले में घंटों पूछताछ से गुजरते देखा है। उन पर मुकदमा चल रहा है। उनकी पूछताछ के फुटेज में हॉलीवुड निर्माता अर्नोन मिल्चन और कैसीनो मैग्नेट, शेल्डन एडेलसन की पत्नी समेत अमीर सहयोगियों के साथ पुलिस का इंटरव्यू शामिल हैं, जिन्होंने प्रधानमंत्री और उनकी पत्नी से महंगे उपहारों की मांग है। बेंजामिन नेतन्याहू के साथ शुरू होती है 'बीबी फाइल्स', जिन्हें उनके अधिकारों के बारे में बताया जाता है। नेतन्याहू सत्रह बरस तक इजराइल के प्रधानमंत्री रहे, लेकिन हम उन्हें दुनिया के बारे में उपदेश देते हुए देखने के आदी हैं।

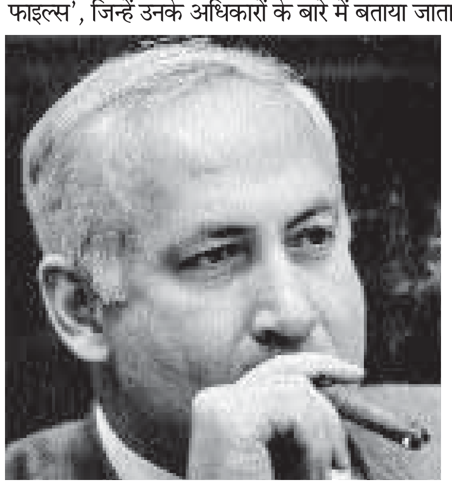

पिछले साल के आखिर में नेतन्याहू, उनके परिवार, अमीर साथियों और निराश सहयोगियों से पुलिस पूछताछ के वीडियो लीक कर दिए थे। टेप 2016 और 2018 के बीच रिकॉर्ड किए थे और पहली बार 'द बीबी फाइल्स' फिल्म में दिखाई दिए। फिल्म का प्रीमियर टोरंटो और न्यूयॉर्क में फेस्टिवंल में हुआ था, लेकिन फिल्म को इजराइल में नहीं देखा जा सकता है। इंग्लैंड में 13 दिसंबर को रिलीज हो रही है। लीक टेप खास हैं, लेकिन बीबी फाइलें नेतन्याहू के भ्रष्टाचार अभियोग और उस इलाके के मौजूदा हालात के बीच ऐसी लाइन खींचती है, जो कहीं न कहीं दोनों बातों को जोड़ती हैं। नेतन्याहू ने बार-बार गलत से इनकार किया है। उन्होंने आरोप लगाया है कि वह मीडिया और राजनीति का शिकार हैं। उन्होंने खुद को बेकसूर बताया है।

फिल्म कहती है कि मुकदमा उस कारण का हिस्सा है, जिससे हताश नेतन्याहू ने अपने देश और आसपास को रसातल में पहुंचा दिया। नेतन्याहू ने पूरे युद्ध के दौरान कहा है कि यह हमला इजराइल की सुरक्षा के लिए है। फिल्म डायरेक्टर का कहना है कि अंतर्राष्टरीय समुदाय के लिए समझना जरूरी है कि नेतन्याहू इजराइल नहीं हैं और नेतन्याहू की आलोचना वाजिब है। उनकी आलोचना करना यहूदी-विरोधी और इजराइल-विरोधी भी नहीं है।

फिल्म में वीडियो टेप चौंकाने वाले हैं कि नेतन्याहू फिलीस्तीनी राजनीति को बांटने करने के लिए उन्हें फतह से अलग रखने के लिए हमास का साथ दे रहे हैं। वह द गॉड फादर का डायलॉग सुनाते हैं- **अपने दोस्तों को करीब रखें और दुश्मनों को अभी भी करीब रखें।**

सपनों से भरी वो नीली आंखों का जादू

हिंदी फिल्मों के इतिहास में राज कपूर का नाम किवदंती की तरह दर्ज है। वे सिर्फ कलाकार ही नहीं डायरेक्टर और संगीत की समझ वाले बेजोड़ फिल्मकार थे। राज कपूर ने उस जमाने में सिनेमा की परिभाषा ही बदलकर सिनेमा को ऊंचाई पर पहुंचाया। उनकी नीली आंखों में कई ऐसे सपने थे जिनमें से कुछ पूरे हुए कुछ अधूरे रह गए। बॉलीवुड उनकी 100वीं जन्म जयंती मना रहा है। किस्सों से भरे जीवन में कई अनोखी बातें आज भी चर्चा में!

राज कपूर: 100वीं जयंती

एकता शर्मा

(वरिष्ठ पत्रकार और लेखिका)

राज कपूर आज इस दुनिया में नहीं है। आज फिल्म इंडस्ट्री और परिवार उनकी सौंवी जयंती मना रहा है। उन्होंने अपने जीवन काल में फिल्म निर्माण और अदाकारी के मामले में जो विरासत खड़ी की, वो कभी धूमिल नहीं हो सकती। अभिनय और कैमरे की नजर से कहानी को पिरोकर फिल्म निर्माण करने वाले राज कपूर ने सिनेमा को कई सुपरहिट और सदाबहार फ़िल्में दी। राज कपूर की काबिलियत सिर्फ इतनी ही सीमित नहीं है। वे जब कोई फिल्म बनाते थे, तो उन्हें अहसास होता था कि कौन सा गाना या डायलॉग आइकॉनिक होगा। राज कपूर का जन्म पठानी हिन्दू परिवार में हुआ था। पांच भाइयों और एक बहन में सबसे बड़े राज कपूर ने अपनी शिक्षा सेंट जेवियर्स कॉलेजिएट स्कूल, कोलकाता और कर्नल ब्राउन कैंब्रिज स्कूल देहरादून से ली।

फिल्मों पर अच्छी पकड़ ने उन्हें बॉलीवुड का शोमैन बना दिया। राज कपूर ने उस जमाने में सिनेमा की परिभाषा ही बदलकर सिनेमा को ऊंचाई पर पहुंचाया। आज भी लोग उनकी फिल्मों को याद करते हैं और गाने सुनते हैं। राज कपूर को लेकर एक किस्सा ये भी है कि उनको सफेद रंग से बड़ा प्यार था। वे अपनी फिल्मों में हीरोइन को सफेद साड़ी जरूर पहनाते थे। इसके अलावा उनकी पत्नी कृष्णा राज कपूर भी ज्यादातर सफेद साड़ियां ही पहनती थीं। कहा जाता है कि सफेद रंग को राज कपूर अपने लिए लकी मानते थे।

राज कपूर की फिल्मों के गानों का किन्नरों से बड़ा कनेक्शन रहा है। कहते हैं कि राज कपूर अपनी फिल्म में रखे जाने वाले गाने को किन्नरों को जरूर सुनाते थे और उनसे मशविरा लेते थे। राज कपूर की पार्टियां बहुत मशहूर हुआ करती थीं। होने वाली होली पार्टी में किन्नरों को जरूर बुलावा भेजा जाता। राज कपूर उनके साथ नाचते-गाते थे और सेलिब्रेट करते थे। साथ ही साथ वो किन्नरों से काम के सिलसिले में भी बातें करते थे। कहते हैं कि राज कपूर होली पार्टी में आने वाले किन्नरों को फिल्म का गाना सुनाते। जब किन्नर उसपर हामी भरकर मुहर लगा देते, तभी उसे फिल्म में रखा जाता था, नहीं तो रिजेक्ट कर दिया जाता था। कहा जाता है कि फिल्म 'राम तेरी गंगा मैली' के गाने राज कपूर ने किन्नरों को सुनाए थे। उन्होंने जब हां कहा तब जाकर गाने फिल्म में रखे गए थे। वहीं एक गाने को किन्नरों ने रिजेक्ट कर दिया था, जिसे राज कपूर ने बिना सोचे-समझे तुरंत हटा दिया। उस गाने को हटाने के बाद राज कपूर ने रवीन्द्र जैन से दूसरा गाना लिखने के लिए कहा। तब उन्होंने 'सुन साहिबा सुन' लिखा था. जिसे किन्नरों ने पास कर दिया और ये गाना आज भी सुना जाता है।

उनकी सबसे बड़ी सफलता और खासियत थी उनके काम करने की स्टाइल। वह ऐसे काम करते थे, जिसकी कोई कल्पना नहीं कर सकता। मसलन 'जिस देश में गंगा बहती है' की कहानी सुनने के बाद शंकर जयकिशन ने यह कहा था कि बेहतर होगा वह इसका संगीत किसी दूसरे संगीतकार को दें, क्योंकि इसमें गानों की सिचुएशन ही नहीं है। इसी कथानक में राज कपूर ने सात दिन में ग्यारह गानों की सिचुएशन निकालकर सभी को

अचंभित कर दिया। कहा जाता है कि वह अपनी फिल्मों के संगीत को दर्शकों से पास कराकर कथानक का हिस्सा बनाते थे। इसी तारतम्य में एक बात यह भी चर्चित है कि वे अपनी फिल्मों के गानों को पहले किन्नरों को बुलाकर सुनाते थे और उनकी सहमति के बाद उसे फिल्म में जोड़ते थे।

1930 के दशक में उन्होनें बॉम्बे टॉकीज़ में क्लैपर-बॉय और पृथ्वी थिएटर में एक अभिनेता के रूप में काम किया, ये दोनों कंपनियाँ उनके पिता पृथ्वीराज कपूर की थीं। राज कपूर बाल कलाकार के रूप में इंकलाब (1935) और हमारी बात (1943), गौरी (1943) में छोटी भूमिकाओं में कैमरे के सामने आ चुके थे। राज कपूर ने फ़िल्म वाल्मीकि (1946), नारद और अमरप्रेम (1948) में कृष्ण की भूमिका निभाई थी। इन तमाम गतिविधियों के बावजूद उनके दिल में एक आग सुलग रही थी कि वे स्वयं निर्माता-निर्देशक बनकर अपनी स्वतंत्र फ़िल्म का निर्माण करें। उनका सपना 24 साल की उम्र में फ़िल्म आग (1948) के साथ पूरा हुआ। उन्होंने प्रमुख भूमिका भी 'आग' में ही निभाई, जिसका निर्माण और निर्देशन भी उन्होंने स्वयं किया था।

इसके बाद राज कपूर के मन में अपना स्टूडियो बनाने का विचार आया और चेम्बूर में चार एकड़ ज़मीन लेकर 1950 में उन्होंने अपने आरके स्टूडियो की स्थापना की और 1951 में 'आवारा' में रूमानी नायक के रूप में ख्याति पाई। राज कपूर ने 'बरसात' (1949), 'श्री 420' (1955), 'जागते रहो' (1956) व 'मेरा नाम जोकर' (1970) जैसी सफल फ़िल्मों का निर्देशन व लेखन किया और उनमें अभिनय भी किया। उन्होंने ऐसी कई फ़िल्मों का निर्देशन किया, जिनमें उनके दो भाई शम्मी कपूर व शशि कपूर और तीन बेटे रणधीर, ऋषि व राजीव अभिनय कर रहे थे। यद्यपि उन्होंने अपनी आरंभिक फ़िल्मों में रूमानी भूमिकाएँ निभाई, लेकिन उनका

सर्वाधिक प्रसिद्ध चरित्र 'चार्ली चैपलिन' का ग़रीब, लेकिन ईमानदार 'आवारा' का प्रतिरूप है। उनका यौन बिंबों का प्रयोग अक्सर परंपरागत रूप से सख्त भारतीय फ़िल्म मानकों को चुनौती देता था।

राज कपूर ने बरसात (1949), श्री 420 (1955), जागते रहो (1956) व मेरा नाम जोकर (1970) जैसी सफल फ़िल्मों का निर्देशन व लेखन किया और उनमें अभिनय भी किया। उन्होंने ऐसी कई फ़िल्मों का निर्देशन किया, जिनमें उनके दो भाई शम्मी कपूर व शशि कपूर और तीन बेटे रणधीर, ऋषि व राजीव अभिनय कर रहे थे। उन्होंने अपनी आरंभिक फ़िल्मों में रूमानी भूमिकाएँ निभाई, लेकिन उनका सर्वाधिक प्रसिद्ध चरित्र 'चार्ली चैपलिन' का ग़रीब, लेकिन ईमानदार 'आवारा' का प्रतिरूप है। उनका यौन बिंबों का प्रयोग अक्सर परंपरागत रूप से सख्त भारतीय फ़िल्म मानकों को चुनौती देता था। मेरा नाम जोकर, संगम, अनाड़ी, जिस देश में गंगा बहती है, उनकी कुछ बेहतरीन फिल्में रही। बॉबी, राम तेरी गंगा मैली, प्रेम रोग जैसी हिट फिल्मों का निर्देशन भी किया।

फिल्म समीक्षा

आदित्य दुबे

(लेखक वेबसाइट ई-अंतर्भव में प्रबंध निदेशक है)

अग्नि: अग्निशामकों की तथाकथा को समेटती प्रभावी फिल्म

फिल्म -'अग्नि ' न तो निव्वल ओटीटी के लिये बनी है ,न वो सिनेमाघरों में पहले रिलीज़ होकर फिर ओटीटी पर आई है यह फिल्म तो वितरकों के हाथ खड़े कर देने फर ओटीटी पर दिखाई जा रही है। निर्देशक राहुल ढोलकिया की इस फिल्म को इसी साल 25 जून को सिनेमाघरों के लिये सेंसर सर्टिफिकेट मगर फिल्म अब जाकर दिसमबर में रिलीज हो रही है ओटीटी पर। मलयालम फिल्म 'फायरमैन' को छोड़ दें तो अग्निशमन कर्मियों की कहानियां बड़े परदे पर ज्यादा कही नहीं गई हैं। हिन्दी में बहुत पहले एक फिल्म आई थी निर्देशक रवि चोपड़ा की 'द बर्निंग ट्रेन', लेकिन उसकी कहानी में भी आग बुझाने वालों का दर्द नहीं ही था। इस नज़रिये से अग्निशामकों पर बनाई गई यह एक साहसिक फिल्म है ।

आग बुझाने की नौकरी करने वालों की कहानी पर बनी यह फिल्म अपने मूल विचार में अच्छी फिल्म है। फिल्म एक प्रेरणा-गीत - ' ज्वाला में जो जीते हैं ,वो अमर हो जाते हैं ..' के स-स्वर पाठ से शुरु हौती है ।समाज के इस बेहद अहम हिस्सा रहे इन अग्निशामकों की कहानियां बड़े परदे पर क्यों नहीं कही गई? यह अपने आप में विचारणीय प्रश्न है। कुल मिलाकर साल में एक ही बार इन कर्मचारियों को ईनाम की बारी आती है और वह भी गणतंत्र दिवस पर राष्ट्रपति पदक दिये जाने से बाकी साल कहीं इन लोगों की सुध नहीं ली जाती है । पुलिस वाले भी इनकी खास इज्जत करते हैं यह बात भी फिल्म में प्रतिध्वनित होती है ।

कहानी की यदि हम बात करें तो फिल्म में एक है विठ्ठल राव यानी प्रतीक गांधी । एक फायर स्टेशन का हेड । वो और उसकी टीम जान पर खेलकर आग में फँसे लोगों को बचाती है. विठ्ठल का साला समित सावंत यानी दिव्येंदु शर्मा पुलिस में है और उससे ज्यादा कामयाब है । उसके पास बड़ा घर है, गाड़ी है विठ्ठल का बेटा भी अपने फायर फाइटर पापा की जगह अपने मामा को अपना हीरो मानता है. और ये बात विठ्ठल को खराब भी लगती है, और यही तथ्य कहानी का केन्द्रीय विषय है

कि फायर फाइटर्स को वो इज्जत क्यों नहीं मिलती जो मिलनी चाहिए ?

कहानी इस तरह से बुनी गई है कि मुंबई में बड़ी बड़ी बिल्डिगों में आग लगती है और आग लगने का तरीका एक ही है. क्या इसके पीछे कोई साजिश है, और साजिश है तो किसकी, लेकिन इस कहानी के जरिए जो असली कहानी कही जाती है वो है देश के हीरोज फायर फाइटर्स की अनदेखी की ही है । इस लिहाज़ से यह एक काफी असरदार फिल्म है । यह फिल्म आपको बताती है कि फायर फाइटर क्या करते हैं, ये फिल्म बताती है कि हमारे आसपास कई ऐसे हीरो हैं जिनके बारे में हमें पता ही नहीं है. ये फिल्म एक अच्छी पेस से चलती है, आपको बोर नहीं करती । कुछ कुछ कहती है, आपको एंटरटेन करती हुई ये एक अच्छी पेस से आगे बढ़ती रहती है । आपको जानकारी भी देती है, आपको कुछ महसूस भी कराती है और एंटरटेन भी करती है. इस फिल्म की सबसे बड़ी खूबी है इसका टॉपिक, जो नया है, आग लगने वाले सीन काफी अच्छे से फिल्माए गए हैं ।आपको भले ये लगे कि मेन कहानी साधारण है लेकिन कहानी के पीछे जो फायर फाइटर्स की कहानी महसूस कराई गई है वो दिल को छू जाती है.

प्रतीक गांधी ने विठ्ठलराव की मुख्य भूमिका कमाल का अभिनय किया है । एक हीरो फायर फाइटर, एक पिता, एक पति, हर शेड में वो जमे हैं । मुम्बइया भाषा को उन्होंने जबरदस्त तरीके से पकड़ा है । उनकी कॉमिक टाइमिंग भी शानदार है, यह उनके अब तक के बेस्ट परफॉर्मेंस में से एक है। दिव्येंदु शर्मा को भले हम मुन्ना भैया के रुप में जानते हों मगर इस फिल्म में उनकी भूमिका देख कर लगता है उनकी एक्टिंग रेंज काफी जबरदस्त है । उन्होंने भी मुम्बइया भाषा को कमाल तरीके से पकड़ा है और इस भूमिका में जान डाल दी है । फायर फाइटर की पत्नी की भूमिका में साई तमाहन्कर अच्छी लगी हैं , सिम्पल से लुक में साई ने कमाल की एक्टिंग की है. फायर फाइटर बनी संयमी खेर ने भी बढ़िया काम किया है ।जीतेंद्र जोशी का काम भी अच्छा है, चाइल्ड आर्टिस्ट कबीर शाह भी काफी प्रभावित करते हैं ।

इस फिल्म को राहुल ढोलकिया और विजय मौर्य ने लिखा है और राहुल ढोलकिया ने निर्देशन भी किया है । उन्होंने जो विषय चुना है सबसे पहले तो इसके लिए उनकी प्रशंसा की जानी चाहिए और जिस तरह से उन्होंने इसे पेश किया वो भी काबिले तारीफ है । फिल्म में कहीं भी ओढ़ा हुआ गाँभीर्य नहीं है मज़ेदार कॉमिक टच है, इमोशन भी है और मैसेज भी है । कुल मिलाकर यह फिल्म जरूर देखिए और अपने इलाके के फायर फाइटर्स को सलाम करके आईये।

हर वर्ग का विकास कर रही मोहन सरकार-हेमंत खंडेलवाल

सरकार के एक वर्ष पूर्ण होने पर पत्रकार वार्ता आयोजित

बैतूल। मध्यप्रदेश सरकार का एक वर्ष का कार्यकाल पूर्ण होने पर बैतूल विधायक हेमंत खंडेलवाल ने जिला भाजपा कार्यालय विजय भवन में आयोजित पत्रकारवार्ता को संबोधित करते हुए कहा कि मध्यप्रदेश में भरपूर प्राकृतिक संसाधन हैं। जल की उपलब्धता भरपूर है। खनिज हैं, वन संपदा है और वन्यप्राणी हैं। समृद्ध सांस्कृतिक और पुरातात्विक विरासत है। यहां कृषि, पशुपालन, उद्योग और पर्यटन के विकास की अपार संभावनाएं हैं। बीते एक साल में हमारी सरकार ने इन संसाधनों के बेहतर उपयोग की दिशा में कदम बढाए हैं और किसानों, महिलाओं, युवाओं के विकास तथा गरीबों के जीवन में खुशहाली लाने के प्रयास किए हैं। वहीं, भाजपा के विधायक श्री खंडेलवाल ने कहा कि प्रदेश की भाजपा सरकार ने बीते एक साल में प्रदेश के समग्र विकास की दिशा में कदम बढ़ाए हैं मध्यप्रदेश और उत्तरप्रदेश सरकारों ने केन-बेतवा नदियों को जोडऩे का निर्णय लिया। हमारी सरकार ने इस परियोजना में आ रही जटिलताओं को दूर किया सिंचाई के अलावा पेयजल का संकट भी खत्म होगा। श्री खंडेलवाल ने कहा कि सरकार ने किसानों की समृद्धि के लिए अनेक कदम उठाए हैं। हम समर्थन मूल्य पर गेहूं की खरीदी पर 125 रुपये प्रति क्विंटल बोनस दे रहे हैं, तथा समर्थन मूल्य 4892 रुपये प्रति क्विंटल पर सोयाबीन की खरीदी की जा रही है। किसानों की भूमि संबंधी समस्याओं को समाप्त करने के लिए हमने ई-पंजीयन, नामांतरण, बंटवारे आदि की व्यवस्था की है। उन्होंने कहा कि कृषि उत्पादन में मध्यप्रदेश लगभग अधिकतम सीमा के निकट पहुंच रहा है। इसलिए भविष्य में किसानों की आय बढ़ाने के लिए पशुपालन को बढावा दे रहे हैं। सरकार ने लाडली बहना योजना में 1.29 करोड़ बहनों के खातों में 19212 करोड़ रुपये से अधिक की राशि डाली है।

55 जिलों में पीएम एक्सीलेंस कॉलेज शुरू- युवाओं को शिक्षा के बेहतर अवसर उपलब्ध कराने के लिए सरकार ने प्रदेश के सभी 55 जिलों में पीएम एक्सीलेंस कॉलेज शुरू कर दिए हैं। इन कॉलेजों में शिक्षण की आधुनिक व्यवस्थाओं के साथ छात्र-छात्राओं को कॉलेज तक लाने के लिए बसों की व्यवस्था भी की गई है। उन्होंने कहा कि युवाओं को स्वरोजगार से जोडऩे के लिए सरकार ऋण दे रही है। युवाओं को रोजगार के बेहतर अवसर उपलब्ध कराने के लिए हम इंडस्ट्री कॉरिडोर स्थापित कर रहे हैं। श्री खंडेलवाल ने कहा कि चिकित्सा क्षेत्र में भी हमने लगातार काम किया। शपथ लेते ही हमने स्वास्थ्य विभाग और चिकित्सा शिक्षा मंत्रालय का एकीकरण किया, जिससे संसाधनों की बचत हो रही है।

जलपरी के तरह दोनों पैर जुड़े हुए बच्चे ने लिया जन्म, 10 घंटे के बाद हो गई मौत

बैतूल। जिले के भैंसदेही तहसील के एक गांव की 19 वर्षीय महिला ने शनिवार को एक जलपरी जैसे बच्चे ने जन्म दिया। हालांकि जन्म के 10 घंटे बाद ही उसकी मौत हो गई। बच्चे के पैर मछलियों के पिछले पंख की तरह आपस में जुड़े हुए थे। जानकारी के मुताबिक महिला को प्रसव के लिए सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र भैंसदेही में भर्ती कराया गया था, जहां प्रसव के बाद एक बच्चे का जन्म हुआ। जिसे शनिवार सुबह करीब 9 बजे जिला अस्पताल रेफर कर दिया गया। जांच में पाया गया कि बच्चे को मेजर कंजेनिटल मालफॉर्मेशन है। इसे मरमेड सिंड्रोम या सिरेनोमेलिया भी कहा जाता है। इसके बॉडी के नीचे का सिरा पूरा चिपका हुआ था। यह किसी जलपरी की तरह दिख रहा था। डॉक्टर्स के मुताबिक एक लाख बच्चों में किसी एक के साथ ऐसा होता है। दोनों पैर चिपके होने से बच्चे का सेक्स डिटरमिनेशन (जननांगों की पहचान) नहीं हो सका। उसके नीचे के ऑर्गन मिक्स्ड है। पहचानना मुश्किल है कि वह बालक है या बालिका। जांच में उसे हार्ट डिजीज भी पाई गई है। जिला अस्पताल के सिविल सर्जन और शिशु रोग विषेशज्ञ डॉ. जगदीश घोरे के मुताबिक जिस मां ने इस बच्चे को जन्म दिया है, उसकी उम्र महज 19 साल है। यह एक प्री-मैच्योर डिलीवरी थी। जन्म के समय बच्चे का वजन सामान्य बच्चों से कम पाया गया। बच्चों के साथ उसकी मां को भी जिला अस्पताल रेफर किया गया था। जहां मां की हालत सामान्य है। जबकि बच्चों ने इलाज के दौरान दम तोड़ दिया। डॉक्टर के मुताबिक उसे सांस लेने में तकलीफ हो रही थी। उसका हार्ट भी ठीक से काम नहीं कर रहा था।

स्टेडियम बना आयुर्वेद चिकित्सालय

योग एवं आरोग्य शिविर का आज होगा समापन

संजय द्विवेदी, बैतूल। शहर के लालबहादुर शास्त्री स्टेडियम में 13 दिसंबर से 15 दिसंबर तक भारत स्वाभिमान ट्रस्ट एवं पतंजलि समिति के बैनर तले योग-आरोग्य शिविर का आयोजन किया जा रहा है। इस शिविर में शनिवार को बैतूल के साथ-साथ आसपास के जिले से आए हुए नागरिकों ने सुबह 6 से 8.30 बजे तक योग का लाभ और उसके बाद आरोग्य शिविर का लाभ प्राप्त किया। 13 एवं 14 दिसंबर को लगभग 1500 रोगियों को आयुर्वेद चिकित्सा परामर्श तथा लगभग 500 रोगियों को पंचकर्म का लाभ मिला। ओम आयुर्वेद मेडिकल कॉलेज एण्ड हॉस्पीटल भारत-भारती ने आरोग्य शिविर में पंचकर्म की क्रियाओं को संपादित करने के लिए पृथक- पृथक पुरुष एवं महिला केबिन की व्यवस्था कराई है जिसमें महाविद्यालय में पदस्थ आयुर्वेद के विशेषज्ञ चिकित्सक एवं विद्यार्थियों द्वारा रोगियों के रोगानुसार पंचकर्म क्रियाओं को संपादित किया जा रहा है। इस आरोग्य शिविर में सिवनी जिले से पधारे प्रसिद्ध आयुर्वेदाचार्य व भारत स्वाभिमान ट्रस्ट के सिवनी प्रभारी डॉ. गजेंद्र डहरवाल एवं बैतूल जिला के आयुष चिकित्साधिकारी डॉ. योगेश चौकीकर एवं उनका स्टॉप भी अपनी निशुल्क सेवाएं

निरंतर प्रदान कर रहा है। शिविर में रोगियों के सुझाव एवं शिकायत की भी व्यवस्था की गई है, जिसमे आगंतुक पूरे शिविर के अनुभव के आधार पर अपने विचार सुझाव के रूप में दे रहे है। शिविर में गृध्रसी,(सायटिका), कटिवात, पक्षाघात, शिराज ग्रंथि (वेरीकोज वेन) अर्श मन्याशूल आदि के रोगियों को उपयुक्त उपचार तथा परामर्श दिया जा रहा हैं।

शिविर का आज होगा समापन, लेकिन जारी रहेगा योग और आरोग्य शिविर- इस तीन दिवसीय योग-आरोग्य शिविर में योग के साथ हजारों लोगों ने स्वास्थ्य लाभ भी प्राप्त किया। ओम आयुर्वेदिक महाविद्यालय के डॉ. संदीप पाल ने बताया कि इस आरोग्य शिविर में लोगो की बढ़ती भीड़ और गणमान्य लोगों के सुझाव के आधार पर 15 दिसंबर रविवार के बाद भी अगले कुछ दिनों तक आरोग्य शिविर का निरंतर संचालन ओम आयुर्वेदिक मेडिकल कॉलेज जामठी बैतूल के परिसर में किया जाएगा। शिविर आयोजको ने सभी नागरिकों से रविवार 15 दिसंबर को अधिक से अधिक संख्या में शिविर में पहुंचकर योग लाभ लेने एवं आरोग्य शिविर के लिए अपना रजिस्ट्रेशन करवाकर स्वास्थ्य लाभ लेने का आह्वान किया है।

3 साल की बच्ची, 75 साल के बुजुर्ग और 85 साल के वयोवृद्ध ने भी किया योग

शनिवार की सुबह योग करने पहुंचे लोगों में से एक बच्ची इशिता द्विवेदी को देखकर स्वामी जी ने उसे अपने पास बुलाया और योग के संबंध में सवाल-जवाब करते हुए उन्होंने इशिता से उनके द्वारा प्रतिदिन किये जाने वाले योगासनों के संबंध में पूछा और करके दिखाने को कहा, तो इशिता ने मंच से सभी को सूर्य नमस्कार करके दिखाया। जिसकी वहां उपस्थित सभी लोगों ने सराहना की। वहीं शिविर में आए एक 75 वर्षीय बुजुर्ग रामेश्वर दुबे ने भी मंच पर जाकर स्वामी जी के समक्ष कई योगासन किए। उनके साथ आए 85 साल के वयोवृद्ध घुड़कियाजी देशमुख ने भी मंच के सामने जाकर स्वामी जी के समक्ष योगासन किया। शिविर में आए बडोरा निवासी अशोक सरले ने मंच पर जाकर स्वामी जी को बताया कि उन्हें पेट से संबंधित गंभीर बीमारी अल्सरेटिव कोलाइटिस थी, जिसके कारण उन्हें दिन भर दस्त लगते थे, और इस को लेकर झोलाछाप डॉक्टर से लेकर बड़े-बड़े डॉक्टरों के पास वह गए, समय के साथ-साथ लाखों रुपए भी खर्च किए, परन्तु उन्हें कोई आराम नहीं मिला। वे इस बीमारी से इतने परेशान हो गए थे कि उनके मन में बीमारी के बाद आत्महत्या के विचार आते थे। इसके बाद हर तरफ से हारकर पतंजलि के हरिद्वार के शिविर में सम्मिलित होकर तथा योग की संकल्प शक्ति के द्वारा ही उन्होंने अपनी इस गंभीर बीमारी को ठीक किया। इस अवसर पर नगरपालिका बैतूल अध्यक्ष पार्वतीबाई बारस्कर, भारत स्वाभिमान ट्रस्ट व पतंजलि परिवार के बैतूल प्रभारी सुनील कुबड़े, आयोजन समिति के संयोजक सुनील द्विवेदी, बलराम जसूजा, संजय पप्पी शुक्ला, अशोक देशमुख, संजय द्विवेदी, आशीष पचौरी, चंद्रशेखर यादव सहित बड़ी संख्या में योग साधक मौजूद थे।

केंद्रीय मंत्री ने एम.पी. के ऑर्गेनिक कॉटन में गड़बड़ी मानी

भोपाल (नप्र)। केन्द्रीय वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री पीयूष गोयल ने माना है कि मध्यप्रदेश में ऑर्गेनिक कॉटन के प्रमाणीकरण में गड़बड़ी हुई है। दरअसल, पूर्व सीएम और राज्यसभा सांसद दिग्विजय सिंह ने करीब चार महीने पहले 27 अगस्त को प्रदेश में ऑर्गेनिक कॉटन (कपास के पौधे से मिलने वाला एक प्राकृतिक रेशा) उत्पादकों के फर्जी समूह बनाकर घोटाला करने का मामला उठाया था।

दिग्विजय ने केन्द्रीय वाणिज्य-उद्योग मंत्री पीयूष गोयल, केन्द्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान और सीएम डॉ मोहन यादव को पत्र लिखकर इस मामले में कार्रवाई की मांग की थी।दिग्विजय सिंह के उसी पत्र पर मंत्री पीयूष गोयल ने जवाब दिया। जवाबी पत्र में उन्होंने लिखा-एक प्रमाणन निकाय को राष्ट्रीय जैविक उत्पाद कार्यक्रम के विनियमन प्रमाणन प्रक्रिया में गंभीर उल्लंघन के आधार पर एक साल के लिए निलंबित कर दिया है। कुछ दूसरे प्रमाणन निकायों पर कार्रवाई जारी है। उक्त उत्पादक समूह का एनपीओपी के तहत पंजीयन रद्द कर दिया गया है।

मंत्री पीयूष गोयल बोले- मंत्रालय कार्रवाई जारी रखेगा: केन्द्रीय मंत्री पीयूष गोयल ने आगे लिखा- इस कार्रवाई के अलावा विभाग ने इस मामले को इंदौर के पुलिस आयुक्त, धार एसपी के सामने भी उठाया और मामले पर संज्ञान लेते हुए एफआईआर दर्ज करने का अनुरोध किया है।

प्रयागराज 'महाकुंभ' जाना हुआ आसान

● रेलवे चलाएगा 2 स्पेशल ट्रेन, ● म.प्र. के 30 स्टेशनों से गुजरेंगी, बुकिंग शुरू

भोपाल (नप्र)। 13 जनवरी से 26 फरवरी तक प्रयागराज में महाकुंभ का आयोजन है। वही मध्य प्रदेश के यात्रियों के लिए रेलवे दो स्पेशल ट्रेन चलाने जा रहा है, यह मध्य प्रदेश के 30 से अधिक स्टेशन से होकर गुजरेंगी। दोनों ट्रेन 30 ट्रिप मध्य प्रदेश से उत्तर प्रदेश के लिए लगाएंगी। भोपाल रेल मंडल के प्रवक्ता नवल अग्रवाल ने बताया कि महाकुंभ पर स्पेशल ट्रेन चलाई जा रही है, रानी कमलापति-बनारस-रानी कमलापति कुम्भ मेला एक्सप्रेस स्पेशल ट्रेन जो कि भोपाल मंडल के रानीकमलापति, मण्डीदीप, औबेदुल्लागंज, बुदनी, नर्मदापुरम, इटारसी स्टेशन से होकर गुजरेंगी। साथ ही 14 दिसंबर से किसी भी

कंप्यूटरीकृत आरक्षण केन्द्र या वेबसाइट से आरक्षण सुविधा का लाभ उठा सकते हैं।

रानी कमलापति-बनारस कुम्भ मेला एक्सप्रेस स्पेशल ट्रेन: बता दें 01661 द्वि-साप्ताहिक स्पेशल ट्रेन 16 जनवरी 2025 से 20 फरवरी 2025 तक प्रत्येक सोमवार एवं गुरुवार को सुबह 11:10 बजे रानी कमलापति से प्रस्थान करेगी और दूसरे दिन सुबह 10:15 बजे बनारस पहुंचेगी। वहीं गाड़ी संख्या 01662 स्पेशल ट्रेन दिनांक 17 जनवरी 2025 से 21 फरवरी 2025 तक प्रत्येक मंगलवार एवं शुक्रवार को दोपहर 14:45 बजे बनारस से रवाना होगी और अगले दिन सुबह 11:30 बजे रानी कमलापति पहुचेगी।

इन स्टेशन पर लेगी ठहराव: मण्डीदीप, औबेदुल्लागंज, बुदनी, नर्मदापुरम, इटारसी, सोहागपुर, पिपरिया, गाडरवारा, करेली, नरसिंहपुर, श्रीधाम, मदनमहल, जबलपुर जंक्शन, देवरी, सिहोरा रोड, कटनी जंक्शन, झुकेही, मैहर, सतना जंक्शन, जैतवार, मझगवां, मानिकपुर, प्रयागराज छिवकी, मिर्ज़ापुर एवं चुनार स्टेशन पर स्पेशल ट्रेन का स्टौपेज रहेगा।

सोगरिया-बनारस कुम्भ मेला एक्सप्रेस स्पेशल ट्रेन: 09801 द्वि-साप्ताहिक स्पेशल ट्रेन 17 जनवरी 2025 से 21 फरवरी 2025 तक प्रत्येक मंगलवार एवं शुक्रवार को सुबह 8:15 बजे सोगरिया से प्रस्थान करेगी और अगले दिन सुबह 10:15 बजे बनारस पहुंचेगी।

मीनाक्षी नटराजन बोली-

संवैधानिक संस्थाएं सत्ताधारी दलों की टूल बनी

भोपाल (नप्र)। प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) के अफसरों की प्रताड़ना के चलते कांग्रेस नेता मनोज परमार और उनकी पत्नी की आत्महत्या के मामले में कांग्रेस की पूर्व सांसद मीनाक्षी नटराजन ने बीजेपी पर हमला बोला है। नटराजन ने कहा कि देश के विपक्ष को सिर्फ सत्ताधारी दल से नहीं लड़ना पड़ रहा है, बल्कि संवैधानिक संस्थाओं से भी लड़ना पड़ रहा है। ये संस्थाएं सत्ताधारी दलों की टूल हो गई हैं। विपक्ष को इनसे भी जूझना पड़ रहा है।

एक लीडर के प्रति प्रेम, विश्वास के बदले टॉर्चर किया: पूर्व सांसद नटराजन ने मनोज परमार आत्महत्या कांड को लेकर कहा कि, कुछ बच्चे गुल्लक में पैसा एकत्र करते हैं और विपक्ष के नेता को भारत जोड़ो यात्रा में जाकर देते हैं। इस मामले में जो कुछ सामने आया है, वह दुखद है। उन्होंने कहा कि पिछले समय में जिस तरह से स्वायत्तशासी संस्थाओं को टूल के तौर पर इस्तेमाल किया जा रहा है। वह भी सामने आया है। मामले में सुसाइड नोट में यह बात सामने आई है। उन्हें धमकी दी जाती है कि एक दल ज्वॉइन कीजिए। विपक्ष के नेता राहुल गांधी प्रधानमंत्री भी हो जाएंगे तो भी उनकी धाराएं कम नहीं होंगी। इस तरह की धमकी भरी बातों ने कई सवाल खड़े किए हैं। नटराजन ने कहा कि जिस तरह से एक राजनीतिक पार्टी के लीडर के प्रति प्रेम और विश्वास की वजह से टॉर्चर किया गया है।

पुलिस कप्तान गेहलोद द्वारा चलाए जा रहे विभिन्न ऑपरेशन से काबू आ रही अपराध की बीमारी

देवास/मोहन वर्मा। देवास में बड़वानी से स्थानान्तरित होकर आए पुलिस अधीक्षक पुनीत गेहलोद ने बीते दो माह की अल्प अवधि में ही अपनी विशिष्ट कार्यशैली से एक तरफ जहां अपराध की दुनिया में सक्रिय अपराधियों में हड़कंप मचा दिया है वहीं पीड़ित और आमजन भी पुलिस द्वारा उठाए जा रहे त्वरित एक्शन से राहत महसूस कर रहा है।

पुलिस कप्तान गेहलोद द्वारा लंबे समय से जिले के थानों में पेंडिंग केस निबटाने के लिए विभिन्न नामों से शुरू किए गए ऑपरेशन के माध्यम से सकारात्मक पहल के सुपरिणाम सामने आने लगे हैं। अपराधों के ताजा मामलों में भी पीड़ित को त्वरित राहत के साथ अपराधियों पर शिकंजा कसा जा रहा है।

पुलिस कप्तान गेहलोद द्वारा ऑपरेशन सायबर, ऑपरेशन संकल्प, ऑपरेशन प्रहार, ऑपरेशन पवित्र ऑपरेशन हवालात,ऑपरेशन मुस्कान,ऑपरेशन त्रिनैत्रम और पुलिस चौपाल जैसे नवाचार और अभियान के साथ रिकार्ड उपलब्धि हासिल की है।

ऑपरेशन साइबर में साइबर फ्रॉड के शिकारों को राहत दिलाते हुए ठगो के खि़लाफ़ कठोर कार्यवाही की जा रही है। एक नवंबर से अभी तक 5 लाख 15 हजार की ठगी राशि वापस करवाने के साथ 15 लाख 70 हजार की राशि होल्ड भी करवाई गई है। ऑपरेशन संकल्प में वारंट,सम्मन को प्राथमिकता से तामील करवाते हुए अपराधियों को न्यायालय में पेश करने पर जोर देते हुए इस साल के अन्त तक हत्या के 17,हत्या के प्रयास के 11, बलातसंग के 12, छेड़खानी के 18,धोखाधड़ी के 2 तथा मारपीट के 8, प्रकरणों में पीड़ितों को न्यायालयों से न्याय दिलवाया गया। ऑपरेशन प्रहार में एक नवंबर से अब तक 4 लाख 08 हजार रुपयों की 1404 लाख लीटर शराब, 17 लाख कीमत के चार चौपहिया वाहनों को जप्त किया गया। ऑपरेशन पवित्र में शांति भंग करने वालों पर नकेल कसकर बाउंड राशि भरवाई जा रही है। न भरने पर जेल भेजा जा रहा है। एक नवंबर से अब तक 781 व्यक्तियों के विरुद्ध कार्यवाही कर 06 करोड़ 40 लाख 70 हजार के बॉन्ड ओवर किए गए।

ऑपरेशन हवालात में लंबे समय से फ़रार अपराधियों की गिरफ्तारी पर जोर देते हुए फ़रार अपराधियों की त्वरित गिरफ्तारी को सुनिश्चित किया जा रहा है। नवंबर दिसंबर में ही ऐसे 90 फ़रार लोगों को गिरफ्त में लिया गया है जो 24 हजार के इनामी अपराधी थे। ऑपरेशन मुस्कान के अंतर्गत जिले में अब तक अपहृत बच्चों को खोजकर परिजनों के हवाले करने की मुहिम में अब तक अपहृत 260 नाबालिक बच्चों में से 255 को ढूंढकर परिजनों के चेहरों पर मुस्कान लौटाई गई। ऑपरेशन त्रिनैत्रम के तहत जिले के संवेदनशील व्यस्ततम इलाकों में सीसीटीवी कैमरे लगाने का अभियान जारी है। जिले के विभिन्न स्थानों में अबतक 124 कैमरे लगाए गए है और ये अभियान निरंतर जारी है। इन सबके अलावा ग्रामीण क्षेत्र में पुलिस चौपाल के माध्यम से लोगों की समस्याओं को सुना जाकर त्वरित कार्यवाही, प्रति सप्ताह पुलिस जनसुनवाई में आई शिकायतों का एक सप्ताह में निराकरण भी लोगों में एक सकारात्मक संदेश दे रहा है और जिले में अपराधों की बीमारी कारगर तरीके से काबू में आती दिखाई दे रही है।

मोहन सरकार का यह प्रथम वर्ष मध्यप्रदेश में सुशासन, विकास और विरासत के के लिए समर्पित रहा है - राघवेंद्र

देवास। भारतीय जनता पार्टी भाजपा कार्यालय में प्रेस कॉन्फ्रेंस संपन्न हुई। भाजपा मीडिया प्रभारी धर्मेंद्र चौधरी ने बताया कि अत्यंत हर्ष एवं गौरव का विषय है कि मध्य प्रदेश में 13 दिसंबर 2023 को डॉक्टर मोहन यादव जी के नेतृत्व में गठित भारतीय जनता पार्टी की सरकार ने सफल एवं सार्थक 1 वर्ष पूर्ण कर लिया है, 2023 के विधानसभा चुनाव में मध्य प्रदेश के प्रचंड एवं ऐतिहासिक जन आशीर्वाद से भाजपा पार्टी की सरकार बनी,एमपी के मन में मोदी और मोदी के मन में एमपी का नारा चरित्रतार्थ हुआ था, आज मोहन सरकार की सफल एक वर्ष पूर्ण होने पर भाजपा कार्यालय में प्रेस कॉन्फ्रेंस का आयोजन किया गया जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश कार्यालय मंत्री श्री राघवेंद्र शर्मा शामिल हुए।

सर्वप्रथम भाजपा जिला अध्यक्ष राजीव खंडेलवाल ने पत्रकारों को संबोधित करते हुए कहा कि भाजपा सरकार मोहन सरकार का यह प्रथम वर्ष मध्य प्रदेश में सुशासन, विकास और विरासत के संवर्धन के लिए समर्पित रहा है *हाटपिपलिया विधायक मनोज चौधरी* ने कहा सरकार द्वारा

जितनी भी जन कल्याणकारी योजनाएं चलाई जा रही है उनका अच्छे से क्रियान्वयन हर जनप्रतिनिधि बड़ी सक्रियता और पारदर्शिता के साथ किया जा रहा है।

राघवेंद्र शर्मा ने कहा कि,हमारी सरकार ने प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के मंत्र सबका साथ, सबका विकास और सबका विश्वास के साथ गौरवशाली संपन्न एवं विकसित मध्य प्रदेश की संकल्पना को साकार करने का ईमानदार प्रयास किया है। मुख्यमंत्री डॉक्टर मोहन यादव जी ने अपनी 1 वर्ष की कार्यकाल में प्रदेश की उन्नति के लिए किसान, गरीब, महिला और युवाओं के लिए सफलता के द्वार खोल दिए हैं,इससे अन्य वर्गों के जीवन में अभूतपूर्व परिवर्तन आया है। प्रदेश में मुख्यमंत्री जनकल्याण अभियान शुरू किया गया है, जिसमें शासन की जनकल्याणकारी योजनाओं से वंचित नागरिकों को लाभान्वित किया जाएगा और जल समस्याओं का मौके पर शिविर लगाकर निराकरण किया जाएगा। उन्होंने कहा कि मोहन सरकार भाजपा सरकार में इंदौर की हुकुमचंद मिल के 4 हजार 800 श्रमिक परिवारों की लंबित राशि 224 करोड रुपए का भुगतान किया गया, संभल 2.0 के अंतर्गत एक करोड़ 73 लाख से अधिक श्रमिकों का पंजीयन हुआ, 40 हजार से अधिक श्रमिक परिवारों को 895 करोड रुपए से अधिक की अनुग्रह राशि का अंतरण हुआ। प्रधानमंत्री आवास योजना ग्रामीण में 36 लाख से अधिक परिवारों और प्रधानमंत्री आवास योजना शहरी में 8 लाख से अधिक परिवारों का साकार हुआ है घर का सपना।

प्रदेश के विश्वविद्यालयों की कुलपति अब कुलगुरु कहलाएंगे, राज्य स्तरीय रोजगार दिवस के अवसर पर रिकॉर्ड 7 लाख युवाओं को 5 हजार का स्वरोजगार ऋण वितरण हुआ, महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए शासकीय सेवाओं में महिलाओं को 35त्न आरक्षण मिलेगा, प्रदेश की लगभग 26 लाख लाडली बहनों को 450 रुपए में गैस सिलेंडर की रीफिलिंग के लिए वर्ष 2024 में 715 करोड रुपए से अधिक की राशि का अंतरण किया गया। 1 लाख से अधिक दीदीयां लखपति बनी है।

साउथ फिल्मों की 'लेडी सुपरस्टार' नयनतारा अपनी डॉक्यूमेंट्री फिल्म 'बियॉन्ड द फेयरीटेल' के चलते सुर्खियों में छाई थीं। इस डॉक्यूमेंट्री फिल्म में नयनतारा के 'लेडी सुपरस्टार' बनने के सफर को बखूबी दर्शाया गया। लेकिन, एक्ट्रेस के जीवन में एक समय ऐसा आया था कि प्यार के लिए उन्होंने पहले प्यार एक्टिंग से ही दूरी बना ली। एक्ट्रेस ने साल 2011 में उस दौरान अपने बॉयफ्रेंड प्रभुदेवा की वजह से एक्टिंग छोड़ दी थी।

नयनतारा को इंडस्ट्री छोड़ने का अफसोस

साउथ की लेडी सुपरस्टार के नाम से पहचानी जाने वाली एक्ट्रेस नयनतारा 2 बच्चों की मां हैं और खुशहाल जिंदगी जीती हैं। सामान्य परिवार से आने वाली नयनतारा ने अपनी मेहनत की दम पर फिल्मी दुनिया में नाम कमाया और लेडी सुपरस्टार का तमगा हासिल किया। नयनतारा जितनी अपनी फिल्मों को लेकर चर्चा में रहीं हैं, उतनी ही निजी जिंदगी को लेकर सुर्खियां बटोरती रही। नयनतारा को 2 बच्चों के पिता और साउथ के कोरियोग्राफर प्रभुदेवा से प्यार हो गया था।

नयनतारा के प्यार के चलते प्रभुदेवा की 16 साल पुरानी शादी टूट गई थी। तमाम झंझटों के बाद भी नयनतारा का प्यार परवान नहीं चढ़ पाया और प्रभुदेवा के साथ उनकी लव स्टोरी का दुखद अंत हो गया। अब नयनतारा का हाल ही में इसको लेकर दुख फूटा है। जिसमें नयनतारा ने कहा कि उन्होंने प्यार के लिए कितनी कुर्बानियां दी हैं, ये वो ही जानती हैं। नयनतारा ने हाल ही में एक इंटरव्यू में बताया कि उन्होंने कई फिल्मों को प्यार के लिए छोड़ दिया था।

नयनतारा बताती हैं कि मैं जिंदगी के उस दौर में थी, जब मुझे विश्वास था कि आपको प्यार के लिए त्याग करना पड़ता है। मैं काफी कम उम्र और गैरजिम्मेदार थी। मैंने अपने रिश्ते के लिए कई फिल्मों को छोड़ा। लेकिन, एक बात ये भी थी कि मैंने इंडस्ट्री में इस तरह के रिश्तों को करीब से देखा था। यहां दूसरी शादी और रिश्ते कोई बड़ी बात नहीं थी। मैं लंबे समय तक ये मानकर चलती रही कि प्यार के लिए त्याग करना पड़ता है। मैंने इसे काफी सीरियसली लिया।

नयनतारा ने 2003 में ही अपने करियर की शुरुआत कर दी थी। चंद साल में नयनतारा साउथ फिल्म इंडस्ट्री की हिट हीरोइन बनकर उभरीं। साल 2008 में प्रभु देवा और नयनतारा की दोस्ती शुरू हुई और दोस्ती प्यार में बदल गई। लेकिन प्रभुदेवा

पहले से ही शादीशुदा थे और 2 बच्चों के पिता भी। प्रभु देवा और नयनतारा कुछ साल तक रिलेशनशिप में रहे और लिव इन में रहने लगे। इसी दौरान प्रभुदेवा ने अपनी पत्नी को तलाक दे दिया। इसके बाद नयनतारा के साथ रहने लगे। हालांकि दोनों का रिलेशनशिप ज्यादा दिनों तक नहीं चला और दोनों बिना शादी के ही अलग हो गए। बाद में नयनतारा ने 2022 में डायरेक्टर विंगेश से शादी कर ली। अब दोनों 2 जुड़वां बच्चों के पेरेंट्स हैं। उनकी मुलाकात फिल्म नानुम राउडी धान के सेट पर हुई थी और परिणय सूत्र में बंधने से पहले दोनों ने करीब 8 साल तक डेट किया था। नयनतारा की डॉक्यूमेंट्री में उनकी शादी और लव स्टोरी भी दिखाई गई है।

नयनतारा ने कहा कि उस वक्त मुझे लगता था कि वो ठीक था। मेरे अंदर की छोटी सी लड़की को लगता था कि अगर मुझे प्यार चाहिए तो मुझे कुछ कुर्बानियां देनी पड़ेंगी। मुझे उस वक्त लगता था कि अगर आपके पार्टनर को कुछ पसंद नहीं है तो आपको उसे छोड़ना पड़ेगा, उस वक्त मेरी प्यार की समझ यही थी। प्रभु देवा और नयनतारा ने कई साल तक डेट किया था। एक्ट्रेस को डेट करने के दौरान प्रभुदेवा पहले से शादीशुदा और 2 बच्चों के पिता थे। इस रिश्ते की वजह से प्रभुदेवा की शादीशुदा जिंदगी में भूचाल मच गया था और एक्टर की पत्नी ने नयनतारा को पब्लिक में काफी बुरा भला भी कहा था। उन्होंने यहां तक कह डाला था कि अगर नयनतारा उनके सामने आ गई तो वो उन्हें मार देंगी।

अब ऑस्कर में भी धमाका करेगी 'पुष्पा-2'

अल्लू अर्जुन और रश्मिका मंदाना के सितारे इस समय बुलंदियों पर हैं। इन दोनों की फिल्म 'पुष्पा 2' रोज एक नया इतिहास रच रही है। एक सप्ताह में 1000 करोड़ रुपए कमाकर फिल्म 'पुष्पा 2' ने बवाल मचा दिया है। खुद फिल्म 'पुष्पा 2' के मेकर्स को भी इस बात का यकीन नहीं हो रहा कि अल्लू अर्जुन और रश्मिका मंदाना की फिल्म कुछ ऐसा कमाल कर सकती है। इस बीच फिल्म 'पुष्पा 2' को लेकर एक बड़ा अपडेट आया कि फिल्म के मेकर्स अल्लू अर्जुन और रश्मिका मंदाना की फिल्म की फिल्म को सच में इंटरनेशनल लेवल पर ले जाने के बारे में सोच रहे हैं।

एक रिपोर्ट के मुताबिक फिल्म 'पुष्पा 2' के मेकर्स इस फिल्म को इस बार ऑस्कर के लिए नॉमिनेट करने वाले हैं। माना जा रहा है कि अल्लू अर्जुन और रश्मिका मंदाना इस बार अपनी फिल्म को लेकर बहुत कॉन्फिडेंट हैं। अल्लू अर्जुन और

रश्मिका मंदाना को लगता है कि इस साल उनकी फिल्म ऑस्कर में कोई न कोई कमाल तो कर ही जाएगी। ऐसे में अल्लू अर्जुन और रश्मिका मंदाना की टीम ने पुष्पा 2 को ऑस्कर में भेजने की पूरी तैयारी कर ली।

अल्लू अर्जुन और रश्मिका मंदाना अपनी इस फिल्म को ग्लोबल लेवल पर भी प्रमोट करने वाले हैं। इस खबर ने अल्लू अर्जुन और रश्मिका मंदाना के चाहने वालों के बीच खलबली मचा दी। उन्हें लग रहा है कि अल्लू अर्जुन और रश्मिका मंदाना भी अब राम चरण के कदमों पर चल रहे हैं। 2022 में आई फिल्म 'आरआरआर' के लिए राम चरण ने भी ऑस्कर जीत लिया था। इससे पहले राम चरण ने अपनी फिल्म को अमेरिका में खूब प्रमोट किया था। इतना ही नहीं राम चरण ने तो हॉलीवुड के इंफ्लूएंसर के लिए बड़े शोज का आयोजन किया गया था।

रियल बॉक्स

रूढ़ियों की बेड़ियां तोड़ने वाली कुछ फ़िल्में !

हेमंत पाल

लेखक 'सुबह सवेरे' इंदौर के स्थानीय संपादक है।

फिल्मों के कथानक किस प्रेरणा से गढ़े जाते हैं, यदि इस सवाल का जवाब खोजा जाए तो हर जवाब में जीवन के अनुभव, प्रेम कथाएं, सामाजिक परम्पराएं, अनोखी घटनाएं, सामाजिक रूढ़ियां और पारिवारिक रिश्ते ही शामिल होंगी। अभी तक बनी फिल्मों के कथानकों पर सरसरी नजर दौड़ाई जाए, यही पांच-छह विषय ही सामने आएंगे। लेकिन, जिस विषय पर सबसे कम कथानक रचे गए, वो है सामाजिक रूढ़ियां या यूं कहिए कि मान्यताओं को खंडित करने वाली फ़िल्में। यानी ऐसे रीति-रिवाज जो बरसों से समाज में हैं और उन्हें न चाहते हुए भी ढोया जा रहा है। कुछ लोग उन्हें तोड़ना भी चाहते हैं, पर आगे बढ़कर कोई साहस नहीं करता! जब भी इन विषयों पर फिल्मों के कथानक बने, उनकी संख्या उंगलियों पर गिनने लायक है। इसके पीछे कारण यह भी कहा जा सकता है, कि फिल्मकार ऐसे मामलों में उलझना नहीं चाहते! उन्हें पता है कि यदि सामाजिक स्तर पर फिल्म का विरोध हुआ, तो इसका खामियाजा सिर्फ निर्माता-निर्देशक को ही भुगतना पड़ता है। लेकिन, फिर भी कुछ फिल्मकारों ने ऐसी फ़िल्में बनाई, जो दर्शकों ने पसंद की।

गुलामी के दौर में बनी फ्रांज़ ऑस्टेन की फिल्म 'अछूत कन्या' (1936) का निष्कर्ष था कि फिल्मों के जरिए सुधारवाद की बात कैसे की जाए! ज्वलंत मुद्दों पर आधारित कहानियों को तब सामने लाना आसान नहीं था। वह भी ऐसे समय में, जब फ़िल्मों के विषय समाज और राजनीति के हिसाब से तय होते हों। फिल्म में एक ब्राह्मण लड़के अशोक कुमार और एक अछूत कन्या देविका रानी के बीच प्रेम कहानी को दिखाकर, ऐसे समाज में जीने की बात की गई थी, जो वर्गों में बंटा हो। इस प्रकार के विचारशील मुद्दे पर बनी इस फिल्म को महात्मा गांधी द्वारा भी सराहा था। लेकिन, बाद में किसी ने ऐसा साहस नहीं किया। आजादी के बाद 1954 में पहली ऐसी फिल्म 'बूट पॉलिश' बनी, जिसमें मानवीय मूल्यों को उजागर करने की कोशिश की गई थी। क्योंकि, देश तो आजाद था, पर दिलों से गुलामी के बंधन नहीं टूटे थे। ऐसे समय में 'बूट पॉलिश' जैसी फिल्म एक अलग तरह का अहसास थी। यह फिल्म दो बच्चों भोला और बेलू की कहानी थी। 'बूट पॉलिश' को अन्य फिल्मों के मुकाबले अलग दर्जा मिला। क्योंकि, इस फ़िल्म में सहजता से बताया गया था कि कोई भी काम छोटा या बड़ा हो, वह आत्मनिर्भर जरूर बनाता है। भोला और बेलू भी मेहनत करके कमाई का रास्ता नहीं छोड़ते। एक दिन अपनी कमाई से वे बूट पॉलिश और ब्रश खरीदते हैं और चिल्ला कर कहते हैं 'आज से हमारा हिंदुस्तान आजाद होता है!' राज कपूर ने अपने दम से इस फ़िल्म को अलग बनाया। राज कपूर हमेशा प्रेम पर आधारित फिल्में बनाते रहे थे। 'बूट पॉलिश' उनकी इस फिल्म से उलट थी।

इसके कुछ साल बाद 1957 में वी शांताराम की फिल्म 'दो आंखें बारह हाथ' आई, जो कुछ अलग थी। अपने अनोखे विषय और सभ्य समाज में रहन-सहन के कथित आदर्शों के उलट इस कहानी की वजह से यह फिल्म कसौटी पर खरी उतरी। तब कैदियों को जेल में पीड़ितों की तरह रखा जाता था। ज़िंदगी में किए अपराधों की वजह से उनकी जवानी खो जाती थी। इस फिल्म ने इस धारणा को बदला। फ़िल्म का मुख्य विषय था खूंखार अपराधियों को सुधारने के लिए अहिंसक तरीके अपनाना। यह कहानी जेल वार्डन के इर्द-गिर्द घूमती है, जो छह कैदियों को अच्छा इंसान बनने की राह पर लाता है। इसी साल आई 'शारदा' (1957) एलवी प्रसाद की फिल्म थी। इसकी कहानी भी अन्य फिल्मों से अलग थी। इसका घटनाक्रम कहीं ज़्यादा जटिल था। जब एक प्रेमी युगल एक-दूसरे से जुदा हो जाता है, तो कई अजीब चीजें होती हैं। नायक को एक युवती से प्यार हो जाता है, लेकिन वह उससे शादी नहीं कर पाता। कुछ अनोखी घटनाओं की वजह से, उसके पिता की उसी महिला से शादी हो जाती है! इसके बाद, एक सौतेली मां और बेटे के बीच का रिश्ता देखने को मिलता है, जिसके मायने ही कुछ और होते हैं। ये अपनी तरह की बिल्कुल अलग फिल्म थी।

इसके अलावा 1963 में आई बिमल रॉय की फिल्म 'बंदिनी' में पहली बार मुख्य कलाकारों को बिल्कुल अलग तरीके से दिखाया गया। मुख्य किरदार कल्याणी के व्यक्तित्व के कई पहलू थे। प्रेमी को पाने और अधूरे प्यार के बीच फंसने से उपजी जलन की वजह से वह खून तक कर देती है। उसे जेल हो जाती है। सजा काटने के बाद, वह उसी आदमी के पास लौटकर उसी की हो जाती है। अलग तरह की फिल्मों के दौर में 1972 में आई कमाल अमरोही की 'पाकीजा' को भी गिना जाता है। यह मुगल दौर की नर्तकियों की जिंदगी की कहानी थी। फिल्म का कथानक तवायफ़ों को समाज में स्वीकार करने की राह में आने वाली अड़चनों को उजागर करना था। मीना कुमारी की इस यादगार फिल्म ने यह सवाल भी खड़े किए थे कि समाज के झूठ और ढोंग को मध्यम वर्ग कितनी सहजता से सह लेता है। आज भी फिल्म को दमदार और तीखे संवादों के लिए जाना जाता है। वैश्या विवाह पर बनी फिल्मों में देव आनंद और वहीदा रहमान की फिल्म कालजयी फिल्म 'गाइड' (1965) को भी गिना जाता है। इसकी कहानी अपने समय काल से काफी आगे की बोल्ड थी। ये फिल्म न सिर्फ वैश्या विवाह का समर्थन करती थी, बल्कि इसमें आज की तरह का लिवइन रिलेशन भी दिखाया था। 1966 में आई धर्मेंद्र, अशोक कुमार और सुचित्रा सेन की फिल्म 'ममता' भी वैश्या विवाह के समर्थन का संदेश देने वाली फिल्म थी।

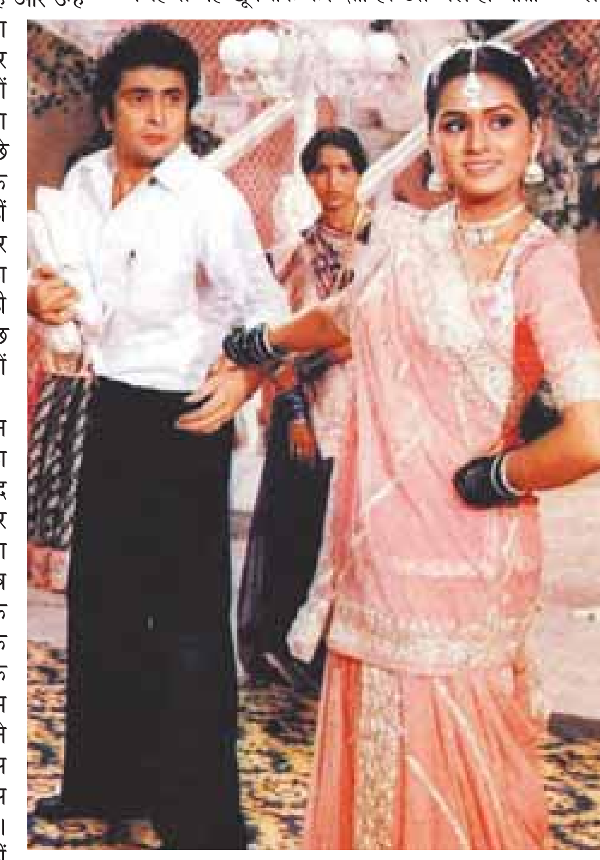

रूढ़ियों को खंडित करने वाली एक फिल्म थी 1975 में आई 'जूली।' फिल्म में नए ज़माने की संवेदनशील लड़की बिना शादी के गर्भवती हो जाती है। इसके बाद उसे कई परेशानियों का सामना करना पड़ता है। धर्म और शादी के बीच की सदियों पुरानी रुकावटों के आधार पर होने वाले घटनाक्रम को इसमें अच्छी तरह से दिखाया था। एक बिन ब्याही मां का संघर्ष क्या होता है, यही इसका कथानक था। 'जूली' उन फिल्मों में थी, जिसमें एंग्लो इंडियन परिवार और उनके ईसाई मूल्यों का खास चित्रण था। लंबे विवाद के बाद 'जूली' की मां हिंदू से अपनी बेटी की शादी के लिए तब तक स्वीकृति नहीं देती, जब तक प्रेमी के पिता अपने पोते और एक खुशहाल परिवार को साथ बनाए रखने की हामी नहीं भरते। घिसी-पिटी रूढ़िवादी सोच के बजाए मानवीय मूल्यों को तरजीह देने की सीख इसी फिल्म ने दी थी।

1982 में आई राज कपूर की फिल्म 'प्रेम रोग' में देश के ग्रामीण इलाकों में रहने वाली विधवाओं की जिंदगी में आने वाली मुश्किलों को बहुत करीब से दिखाया था। फिल्म में राज कपूर ने प्रेमियों के माता-पिता को अपनी 'शान' के लिए अपनी बेटियों और बेटों की जान को दांव पर लगाने के खिलाफ चेतावनी दी थी। नायक देवधर (ऋषि कपूर) शहर से गांव आता है। उसकी बचपन की दोस्त मनोरमा (पद्मिनी कोल्हापुरी) अमीर और रसूख रखने वाले परिवार की लड़की होती है। उसकी शादी एक अमीर खानदान में कर दी जाती है। लेकिन, शादी के बाद मनोरमा के पति की मौत हो जाती है। विधवा मनोरमा ससुराल में बलात्कार का शिकार भी होती है। जब देवधर उसे बचाने के लिए आगे आता है, तब मनोरमा का परिवार विधवा के पुनर्विवाह के नामुमकिन होने का हवाला देकर, उसके साथ मारपीट करता है। भले ही, 'प्रेम रोग' काफ़ी हद तक एक ऐसी कहानी है, जिसमें मौजूद अंतर्निहित मायने फ़िल्म के दौरान महसूस होते हैं, लेकिन राज कपूर के निर्देशन ने इसे एक सुधारवादी क्लासिक फ़िल्म के तौर पर स्थापित कर दिया था।

यश चोपड़ा की फिल्म 'लम्हे' (1991) भी ऐसी ही फिल्म थी, जिसके कथानक में प्रेमी-प्रेमिका, लड़का-लड़की और प्यार-मोहब्बत इन सबकी परिभाषा बदल दी थी। यह फिल्म दूसरी प्रेम कहानियों से बिल्कुल अलग थी। कथानक के मुताबिक, वीरेन एक लड़की पल्लवी से प्यार करता था। पल्लवी की शादी किसी और से शादी हो जाती है। लेकिन, कुछ समय बाद पति-पत्नी की मौत हो जाती है। पल्लवी और उसका पति अपने पीछे एक बेटी को छोड़ जाते हैं। जब यह बेटी बड़ी हुई, तो वो हूबहू अपनी मां पल्लवी (श्रीदेवी) की कॉपी होती है। उसे अपने पिता की उम्र के विरेन (अनिल कपूर) से प्यार हो जाता है। फिल्म का यह विषय देखने वालों के लिए असहनीय जरूर था, यह बहस का विषय भी बना। लेकिन, फिल्म में इस बेमेल प्यार को खूबसूरत अंदाज में दिखाया गया था।

लीक से हटकर बनी फिल्मों में मेघना गुलजार की 'फ़िलहाल' को भी गिना जा रखा सकता है। आज बच्चे को जन्म देने के लिए सरोगेसी आम तरीका है। लेकिन, साल 2002 में जब यह फिल्म रिलीज हुई थी, तब यह बड़ी बात हुआ करती थी। ये कहानी एक ऐसी औरत की है, जो प्राकृतिक रूप से मां नहीं बन सकती। इसलिए वह अपने दोस्त को अपने लिए सरोगेट करने के लिए मनाती है। तब्बू, सुष्मिता सेन, पलाश सेन और संजय सूरी की यह फिल्म बेहद इमोशनल अनुभव रहा। इसके साल भर बाद 2003 में आई 'मातृभूमि' ऐसी फिल्म थी, जिसे देखने लायक फिल्म थी। यह ऐसे समाज की कल्पना थी, जहां औरतों की संख्या कम होकर ना के बराबर बची थी। ऐसे दौर में शादी और परिवार के लिए पुरुषों को लड़कियां नहीं मिलती। इस कारण होने वाले व्यसन फिल्म में दिखाए गए। लड़कियों को भ्रूण में ही मार देने की वजह से पैदा हुई ये स्थिति बहुत भयावह और रोंगटे खड़े करने वाली है। मनीष झा के निर्देशन में बनी इस फिल्म को देखना आसान नहीं है। क्योंकि, इसका ट्रीटमेंट मनोरंजक नहीं है। अब ऐसी फ़िल्में बनने का दौर करीब-करीब ख़त्म हो गया। इसका कारण यह भी है कि अब फिल्म महज मनोरंजन का साधन बनकर रह गई, अब कोई फिल्मों से ऐसी उम्मीद नहीं करता कि रूढ़ियां खंडित हों!

- hemantpal60@gmail.com/ 9755499919

फिल्म आकाश में भी खूब उड़े गाते-लहराते पंछी

अशोक जोशी

कुदरत ने न केवल इंसान बल्कि पशु पक्षियों और नदी पहाड़ों को भी बहुत खूबसूरत बनाया है। यही कारण है कि जब जब इंसान खुले उन्मुक्त आसमान में पंछियों की कतारों को उड़ते देखता है तो उसका मन खिल उठता है। इंसान के इन्हीं

भावों को कई फिल्मकारों ने अपनी फिल्मों में कैद कर इंसानी मन को गुदगुदाने का प्रयास किया है। ऐसी दर्जनों हिंदी फिल्में हैं जिनमें कभी दृश्यावलियों में कभी गीतों और कभी कभी फिल्मों के शीर्षकों में यहां तक कि कथानक तक में पंछियों को सैल्यूलाइड पर उतारा है।

हिंदी फिल्मों के शैशवकाल में फिल्मकारों ने बतौर प्रतीक पंछियों का प्रयोग किया है। किसी फिल्म में जब कोई नायिका खलनायक की कैद में होती है या परिवार के सदस्यों की प्रताड़ना को सहन करती है तो पिंजरे में फड़फड़ाते पक्षियों के दृश्य उस घटना की गहराई को और गहरा कर देते हैं। पहले जब सिनेमा आज जितना बेशरम नहीं हुआ था और परदे पर चुम्बन का दृश्य को दिखाने का साहस फिल्मकारों में नहीं होता था तो वह दृश्यों या गीतों के बीच दो पक्षियां को चोंच लड़ाते दिखाकर नायक नायिका के प्रेम की प्रगाढता को शालीनता के साथ पर्दे पर पेश कर देता था।

जब फिल्म का नायका जेल से छूट कर बाहर निकलता था, तब भी आसमान पर चहचहाकर उडते पक्षी उसकी आजादी का प्रतीक बन जाते थे। प्रेम प्रतीकों के साथ साथ प्रेमी और प्रेमिका के बीच प्रेम पत्रों के आदान प्रदान के लिए भी फिल्मकार पक्षियों का ही उपयोग किया करते थे। ऐसा नहीं है कि फिल्मकारों ने केवल तोता-मैना को ही अपनी फिल्मों में नायक नायिका का प्रतिनिधि बनाया है। फिल्म दर फिल्म अलग अलग पक्षियों ने पर्दे पर पर दस्तक देकर अपनी उपस्थिति दर्ज की है। कभी चिडिया तो कभी तोता , कभी कोयल तो कभी चकोर और कहीं कबूतर हिन्दी फिल्मों में पेश किए गए हैं। जब इतने से भी मन नहीं भरा तो फिल्मकार कौए को भी लाने में नहीं चुके। मनमोहन देसाई एक कदम आगे निकल गए और उन्होंने मर्द से लेकर 'धरमवीर' में बाज को नाटकीय अंदाज में पर्दे पर पेश कर दर्शकों की तालियां बटोरी है।

पहले जब फैंटेसी फिल्मों का जमाना था तब ज्यादातर फिल्मों में यह बताया जाता था कि

राक्षस या शैतान की जान तोते में कैद है। जब कोई नायक किसी फिल्मकार से पंगा लेता था तो कुछ चतुर फिल्मकार उसे आधी फिल्म के बाद कबूतर या तोता बना की अपनी फिल्म पूरी करी लिया करते थे। यदि बात हॉरर फिल्मों की हो तो कुछ फिल्मकार पर्दे पर उल्लू तो कुछ फिल्मकार चमगादड़ को पंख फड़फड़ा के सिनेमा हॉल के अंधेरे में भय का माहौल निर्मित करने में कामयाब हुए हैं। हमारी फिल्मों के गानों में भी पक्षियों या पंछियों का जमकर इस्तेमाल किया गया है। कुछ फिल्मी गीतों पर गौर कीजिए। घर में पिता की कैद से आजाद नर्गिस जब पंछी बनू उडती फिरूं मस्त गगन में आज मैं आजाद हू दुनिया के चमन में गाती है तो सहसा दर्शकों को उसके आजाद होकर उन्मुक्त जीवन जीने का अहसास होता है। फिल्म मैं सुंदर हूं में जब लीना चंदावरकर कमर मटकाते हुए गाती है आज मैं जवान हो गई हूं ओ मिट्ठू मियां तो लगता है वाकई वह जवान हो गई है।

पुरानी फिल्म 'आँखें' की नायिका की नायिका अपने घर की छत पर कौए की कांव कांव सुनकर गाती है मोरी अटरिया पर कागा बोले मोरा जिया डोले तो लगता है उसका मन कौए के लिए नहीं, बल्कि आने वाले नायक की कल्पना कर डोल रहा है। इसी काले कौए को जिसे अपशगुन माना गया है सूरज बडजात्या ने शगुन का प्रतीक बनाकर माधुरी दीक्षित से स्विमिग पूल के किनारे गीत गवा दिया है माई रे माई मुंडेर पे तेरी बोल रहा है कागा। इन्ही बड़जात्या का पंछियों के प्रति प्यार अपनी पहली

फिल्म 'मैंने प्यार किया' में भी तब उमड़ा था, जब नायिका अपने प्रेमी को प्रेम पत्र भेजने के लिए कबूतर का उपयोग करते हुए कहती है कबूतर जा जा जा पहले प्यार की पहली चिट्ठी साजना को दे आ कबूतर जा जा जा। यह हिंदी फिल्म ही है जिसमे नायिका गूंगी होने के बावजूद गाने गा सकती है। फिल्मकार ने 'सरगम' में यह कमाल कर दिखाया। फिल्म की नायिका जयाप्रदा गूंगी है फिर भी गाती है कोयल बोली दुनिया डोली। इसी कोयल की आवाज से नायिका की आवाज की तुलना करते हुए बेटा फिल्म में अनिल कपूर गाते हैं कोयल सी तेरी बोली । तो वाकई लगता है कि नायिका कोयल की तरह ही गाती है। जबकि नायिकाओं की सुरीली आवाज का जादू कोकिल कंठी लता मंगेशकर का हुआ करता था।

ऐसी फिल्मी गीत जिनमें पंछियों का नाम आया है उनमें छत के ऊपर दो कबूतर, मेरा दिल तोता बन जाए, पंछी रे ओ पंछी, नन्हा सा पंछी है तू बहुत बड़ा पिंजरा तेरा, पंछी हूं में उस नभ का, आज उड़ता हुए एक पंछी, तोता मैना की कहानी तो पुरानी हो गई, एक था गुल और एक थी बुलबुल, कैद में है बुलबुल सैयाद मुस्कुराए, मोरे मन का बावरा पंछी क्यूं बार बार बोले, हम पंछी एक डाल के, प्यासे पंछी नील गगन पर गीत मिलन के गाएं। चुन-चुन करती आई चिड़िया दाल का दाना लाई चिड़िया, जंगल में मोर नाचा किसने देखा, उड जा काले कावा, झूठ बोले कौआ काटे, मोरी बागा में बोल, कागा रे जा रे जा रे, कुहू कुहू बोले कोयलिया, पीहू पीहू पपीहे ना बोल, काहे शोर मचाए रे पपीहरा, बोले रे पपीहरा, काहे कोयल शोर मचाए रे, बनके पंछी गाए प्यार का तराना, चल उड़ जा रे पंछी कि अब यह देश हुआ बेगाना, जहां डाल डाल पर सोने की चिड़िया करती है बसेरा, एक डाल पर तोता बोले एक डाल पर मैना, सुनो सजना पपीहे ने कहा सबसे पुकार के, ओ मेरी मैना तू मान ले मेरा कहना, चील चील चिल्ला के कजरी सुनाए, कुछ दिन पहले एक ताल में रहता था एक हंस का जोड़ा, दो हंसों का जोड़ा बिछड गयो रे, भोर होते कागा, चलत मुसाफिर मोह लियो रे पिंजरे वाली मुनिया, मुर्गे ने झूठ बोला, ये आज कल के लडके कबूतर कबूतर और तीतर के आगे दो तीतर शामिल हैं।

फिल्मी दृश्यों और फिल्मी गीतों के अलावा कुछ फिल्मकारों ने अपनी फिल्मों के शीर्षकों में भी पक्षियों को शामिल किया है जिसमें सफेद कबूतर, हम पंछी एक डाल के, सोने की चिडिया, मोरनी, तोता मैना की प्रेम कहानी और झूठ बोले कौआ काटे प्रमुख हैं। एफसी मेहरा की फिल्म कंपनी का नाम ही ईगल फिल्म्स था जिसकी शुरुआत में पृथ्वी के ग्लोब पर एक चील मंडरा कर रुक जाती है। इसके बाद फिल्म के टाइटल आरम्भ होते थे। इसी तरह मद्रास के एक बैनर पक्षीराज फिल्मस ने भी कई लोकप्रिय फिल्मों का निर्माण किया है।

गई सर्दियों से, नई सर्दियों तक...!

प्रकाश पुरोहित

पिछले साल सितंबर-अक्टूबर की ही बात है। इसी सड़क पर रोज शाम घूमते हुए युवा पति-पत्नी को देखा करता था। अभी तो गुलाबी ठंड भी शुरू नहीं हुई थी, लेकिन दोनों इतने इंतजाम से घूमने निकलते थे कि जैसे बर्फ पड़ रही हो। बाकी शरीर तो गरम कपड़ों से ढंका ही रहता था, सिर पर भी गरम कनटोपा लगाए रहते थे। अब रोज ही आमना-सामना होता था। देखता, दोनों रास्ते भर चुहलबाजी और मस्ती-मजाक करते, खूब हंसते और आसपास से गुजर रहे लोगों से बेखबर रहते। लगता था, जैसे दोनों की देर से शादी हुई है, क्योंकि उम्र यही कोई तीस-बत्तीस की रही होगी।

गरमी का तो क्या है ना कि किसी को ज्यादा लगती है तो उसे देख कर आपको गरमी ज्यादा नहीं लगने लगती, लेकिन सर्दी में यह तासीर है कि कोई अगर ज्यादा गरम कपड़े पहने है तो आपको भी सर्दी सताने लगती या लगता है आप में ही तो कुछ ज्यादा गरमी है कि सर्दी नहीं लग रही है। इसीलिए इन दोनों को देखकर कौतूहल तो रहता है कि ये किस प्रदेश के हैं, जिन्हें यहां इतनी सर्दी लगती है, जबकि यह तो मालवा का पठार है, यहां मौसम की हिम्मत ही नहीं होती है कि किसी से ज्यादती कर सके। अब यदि रोज ही नजरें मिलने लगें तो एक दिन ऐसा आ ही जाता है कि एक-दूसरे को देख कर मुस्कान इधर से उधर होने लगती है!

अब मुस्कान से रन-वे बनने लगा तो फिर धीरे-धीरे बातों का 'पुष्पक' भी उड़ान भरने लगा। बात नमस्ते से शुरू हुई। पूछना तो चाहता था कि भाई इतनी भी सर्दी नहीं है, किस दिशा से आए हो, तुम्हें देख कर तो मुझे भी सर्दी लगने लगती है। दोनों तेज-तेज चलते थे और बातें भी करते जाते थे। मुस्कुराहट उनके चेहरे पर कब्जा जमाए रहती थी। फिर एक रोज दोनों जब सामने से आ रहे थे तो मुझे देख कर कुछ ठिठक गए। नमस्कार-चमत्कार के बाद पति ने पूछा 'आप यहीं के हैं?' जवाब देने पर फिर पूछा 'यहां कब से आ रहे हैं, घर कहां है, क्या रिटायर हो गए...' और बाकी भी ना जाने कितने सवाल, मगर ऐसा कुछ नहीं, जो नया हो। आम बातचीत की जैसे शुरुआत होती है ना, ठीक वैसे ही।

बस, यूं ही हर दिन कुछ मिनट के लिए आमना-सामना, कुछ बातें और फिर अपने-अपने रास्ते। इसी बातचीत में पता चला कि लड़का तो पुलिस में है और खिलाड़ी है। छत्तीसगढ़ के किसी गांव से है और लड़की हरियाणा से है। अरेंज मैरिज है, लड़की भी खिलाड़ी रही है और तेज दौड़ा करती थी। कुश्ती लड़ना चाहती थी, लेकिन सवा पसली की होने से घरवालों ने मंजूरी नहीं दी। कुछ समय पहले ही यहां इस शहर में आए हैं। जब इतनी अच्छी बात शुरू हो गई तो यह पूछ लेना तो बहुत ही आसान होता कि तुम दोनों को इतनी ज्यादा सर्दी क्यों लगती है, जवान खून है, नई-नई शादी है, ऐसा कुछ नहीं होना चाहिए, लेकिन अपनी सीमा से आगे बढ़ने की हिम्मत नहीं हुई कि किसी का अपना शरीर है, अपने को क्या। उन्हें यूं ही मस्ती में देखना अच्छा-सा लगता रहा। यह सिलसिला करीब फरवरी के आखिर तक चलता रहा।

फिर उनका आना एकदम बंद हो गया। कुछ दिन तो उनकी तलाश में नजरें इधर-उधर दौड़ती भी रहीं, कभी मन को भी समझाया कि गए होंगे घर-परिवार में! कहां जाएंगे! दोनों जब तक आते रहे, कभी गैर-हाजिर नहीं रहे। मैं तो फिर भी तड़ी मार लेता हूं, लेकिन उनका एक दिन भी नागा नहीं होता। वक्त गुजरता रहा और धीरे-धीरे दोनों का इंतजार भी गायब होने लगा। फिर तो कभी विचार में भी नहीं आते थे। कह सकते हैं उस सड़क पर उनकी धुंधली-सी तस्वीर भी अब बाकी नहीं रही थी। तब तो उनके नाम भी याद थे, लेकिन साल भर के वक्फे ने वो भी बिला दिए। नए चेहरे और नए रिश्ते पनपने लगे, शाम को घुमाने वाली उस सड़क पर।

तभी, यानी अभी कुछ रोज पहले ही मैं अपनी धुन में खरामा-खरामा चला जा रहा था कि सामने से आ रहे जोड़े ने 'नमस्ते अंकलजी' कहा तो चौंक कर देखा। कुछ जाने-पहचाने चेहरे लगे, 'नमस्ते' कह कर उन्हें पहचानने की कोशिश करने लगा। उसी समय उनकी जान-पहचान वाली मुस्कुराहट ने परिचय करा दिया। 'बहुत दिनों बाद आए तुम लोग, कैसे हो, अच्छा मिलते हैं कल' जैसे आम संवाद इधर-उधर हुए और हम अपने-अपने रास्ते। फिर तो हर रोज दुआ-सलाम और मुस्कान का आदान-प्रदान। कुछ बदलाव नजर आ रहा था लड़की में। याद आया, उसका नाम किरण है और लड़के का प्रवीण। याद नहीं आ रहा था कि पिछली बार के हुलिए और इस बार के बदलाव में क्या फर्क है। अब सीधे-सीधे पूछ भी तो नहीं सकते। फिर लगभग साल भर का वक्त भी तो बीच में से गुजर गया!

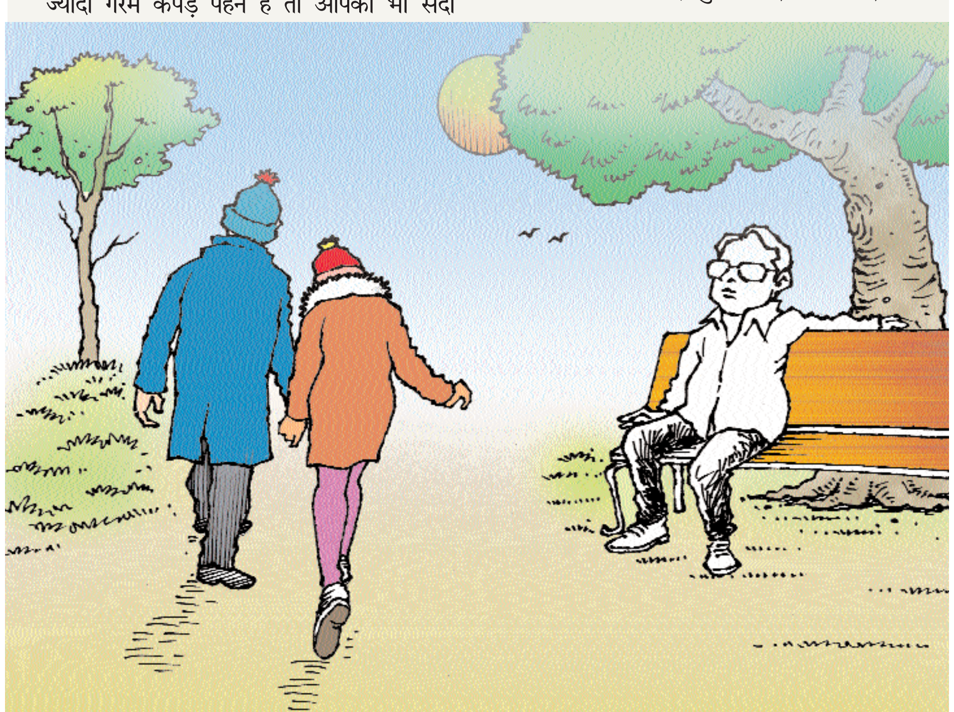

कल ही मुझ से रहा नहीं गया और जैसे ही दोनों मुस्कुराते हुए सामने आ खड़े हुए 'किरण तुम में कुछ बदलाव देख रहा हूं, क्या तुमने बाल सेट करवा लिए हैं, हिरोइन लग रही हो बिलकुल!' वह हंसने लगी। फिर बोली 'पिछली बार तो आपने मेरे बाल देखे ही नहीं थे, कनटोपा लगाए रहते थे हम।' मुझे याद आया, अरे हां यही तो आकर्षण था कि दोनों कनटोप लगाए रहते थे तो बाल कहां से नजर आते।

मेरी आंखों में उग रहे सवाल समझ गई और बताने लगी 'अंकलजी, दरअसल, मुझे कैंसर हो गया था। ऑपरेशन के बाद रेडिएशन और किमोथेरेपी से सिर के बाल एकदम चले गए थे। तब हम एकदम गंजे हो गए थे तो बाहर निकलते समय कनटोप लगा लिया करते थे, तो आपने हमारे बाल तो अब देखे हैं' बताते हुए भी उसकी मुस्कुराहट कहीं छिपने की कोशिश नहीं कर रही थी। 'और फिर ये प्रवीण, ये भी तो टोपा लगाया रहते थे?' 'हां ये कहने लगे, जब तक तुम्हारे बाल नहीं आ जाते, मैं भी सिर पर बाल नहीं आने दूंगा। मैं तो सिर्फ घूमने ही यहां आती थी, तब लगाती थी, ये तो पूरे समय लगाए रहते थे।' मैंने देखा, प्रवीण के घुंघराले काले बाल हवा में लहरा रहे थे। ठंड अभी बढ़ी नहीं थी, मगर ना जाने क्यों मुझे धुजनी-सी भरने लगी और मैंने तय किया, कल से कनटोप लगाऊंगा!

आखिर क्यों साबित करना है और किसे?

क्या कह रही है जिंदगी

ममता तिवारी

लेखक साहित्यकार हैं।

ये थोड़ा विचित्र सवाल है पर जब से जिम्मेदारियों से मुक्त हुई तो सोच में डूबी हूं कि मैंने पूरी जिंदगी में से 75 प्रतिशत जिंदगी सिर्फ खुद को साबित करने में लगा दी, पर किसको? उस यूनीवर्स को मैं क्या साबित करूं जो मुझे और मेरी फ़ितरत को अच्छी तरह पहचानता है या फिर उन लोगों को जिन्हें मेरी गुणवत्ता साबित करने के बाद संदेहास्पद लगती है? आजकल मुझे अफसोस है वो मेरा कीमती वक्त था जो मैंने लोगों को अच्छे बन के दिखने में लगा दिया।

एक बार जब मैं नई शादी होकर आई थी तब मेरी सास को लगता था कि मैं नौकरी पेशा रही हूँ तो खाना वगैरह नहीं बना सकती हूँ तो मैं साबित करने के लिए मैदान में कूद पड़ी। फिर खूब तारीफ हुई। मैं और जम के लग गई फिर धीरे-धीरे जोश कम हुआ। नादां थी तो उदास हो गई। एक दिन मेरी ननद से बात हुई। मैंने पूछा तुम तीन-चार महीना में एक डिश बनती हो। सब तुम्हारी बहुत तारीफ करते हैं। मैं रोज़ इतनी नई-नई रेसिपी बनाती हूँ। उसने कहा कि आपको सब फॉर ग्रांटेड लने लगे हैं इसलिए सब सोचते हैं रोज-रोज क्या कहना।

मैं सोच में डूब गई अपनी उम्र और सामर्थ्?य के हिसाब से मैं घर की जिम्मेदारियों को संभालती थी कि देखो मैं केवल नौकरी पेशा नहीं सब संभाल सकती हूँ। पर मैं थकने लगी थी। बीमार रहने लगी थी। ये तो मैंने अपना साबित करने का उदाहरण दिया। फिर वो लोग जो कुछ भी नहीं करना चाहते। उन्हें इस बात की पड़ी भी नहीं है। जैसे बचपन में मेरी एक बहन मां की मदद नहीं करती थी। मैं झट से मदद करने पहुंच जाती। जब कभी मैं इनकार करती तो माँ कहती वो तो ऐसे ही है बचपन से तू तो मेरी रानी बिटिया है ना और मैं शादी से पहले खुद को रानी बिटिया बनाने में लगी रही। शादी के बाद अच्छी बहू, पत्नी, मां वगैरह वगैरह साबित करने में लगी रही।

आज सोच रही हूं कई रिश्ते टूट रहे हैं। सास ससुर के साथ बहुएं रहना नहीं चाह रही। सास अपने पूरे अधिकार बहू को नहीं देना चाहती। वो साबित करना चाहती है मैं देखो कितनी अच्छी सास हूं। बहू नौकरी पेशा है उसे कितना आराम देती हूं पर वो मेरी ज़रा सी तारीफ़ नहीं करती। बस कर दी ना गलती आपने। ये आपका घर है आपकी च्वाइस, आपकी उम्र। बाद में बहू के जाते ही कमर कस के पूरा घर चमकाती हो भले ही एक सब्ज़ी बनाओ पर दिन भर में, कहीं बर्तन जमाना, कपड़े निकालना, सूखे कपड़े उठाना, बच्चों को स्कूल से आते ही देखना, सब्ज़ी लेना, घड़ी-घड़ी घंटी बजना। शाम से हाथ पैर का टूटना क्योंकि साबित करने के लिए ज़्यादा काम हो गया। अब आप गोलियां खाएंगी या दो चार दिन बिस्तर पर लेट जाएंगी। फिर बहू बेटे से कहती है कि उनसे कौन कहता है इतना काम करो। मैं आकर कर लेती और वो अपने मन में कुंठा पाल लेती है कि सास शायद ये साबित करना चाहती है कि मैं घर नहीं संभाल पाती खाना नहीं बना पाती।

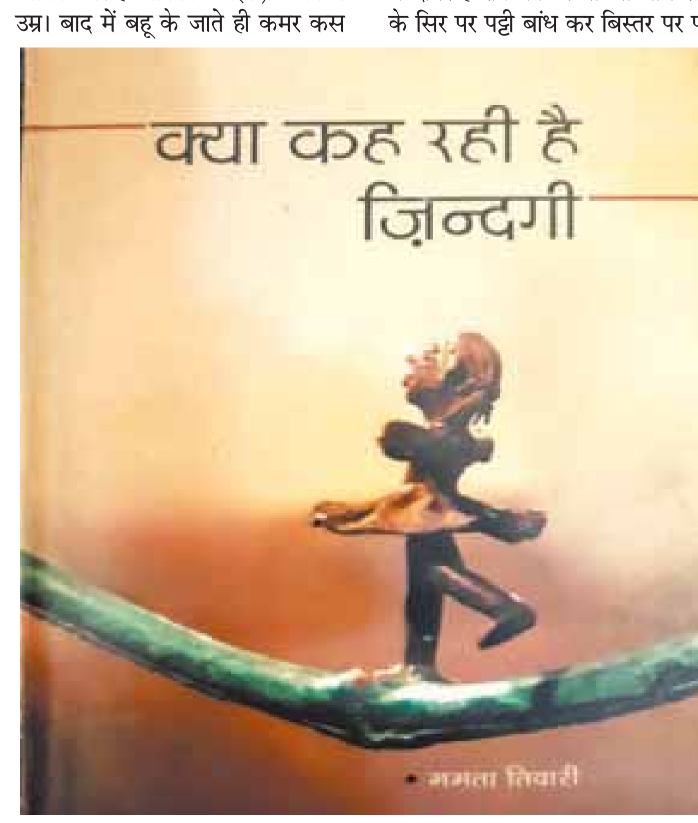

अरे! एक बहू ऐसी भी है कि आपको ज़्यादा शौक है ना तो आप करो हमसे तो नहीं होता और ना ही हमें तारीफ़ चाहिये। ऑफिस से आते ही वाह! मम्मी जी क्या पकौड़े बनाये, एक दिन वड़ा पाव भी बनाइयेगा। आपके हाथ के बहुत अच्छे लगते है। भई, दूसरे दिन ही बन जाते बात ये दीगर है रात तक मम्मी जी बाम लगा के सिर पर पट्टी बांध कर बिस्तर पर पड़ जाती। बेटा सुना जाता तुमने इसे बहुत सिर चढ़ा रखा है वो सोचती क्या सचमुच? अरे, मुझे कुछ होगा तो दो गरम रोटी नहीं खिलायेगी क्या? इसीलिये इतनी सेवा हो रहीं है। उम्मीद ना पाले, वो मस्तमौला है वो मान के चलती है। आपको अच्छा लगता है सब करना।

अब मुझे ये पता करना था कि हक़ीकत में क्या होता है? पहली बात सच है कि घर का थोड़ा बहुत काम करने में, बहू की मदद करने में हर्ज नहीं, पर पूछ कर, उसके काम में अडंगा ना लगाये। आपकी जितनी सामर्थ्?य हो उसके हिसाब से उससे काम पूछ लें, पर भूल कर भी उतना काम ना ले कि बाद में कहें हाय! बदन टूट रहा और बहू गिल्ट में आ जाये। और बहू भी ये ना सोचे कि मैं तो सब काम कर के जा रही हूँ। बाद में क्या काम करती है? बहुत काम होते है दिन भर में, छुट्टी वाले दिन को याद करिए। आप सोचती हैं कि हे भगवान छुट्टी क्यों होती है?

अपने अपने काम की लिस्ट बनाइये, बिल्कुल ईमानदारी से बताइये। केवल बहू को नहीं पूरे घर को। मैं इतना ही कर सकती हूँ। बच्चों को छोटे छोटे काम सिखाइये। पति को हाथ में चाय देना, पानी देना बंद करें आप भी बूढ़ी है उनके जैसी। ये सोचना तो बंद ही कर दीजिये कि कोई क्या कहेगा। आपको तमगा नहीं मिलेगा बल्कि सोच सोच के अवसाद में पड़ जाएंगी।

मैंने उन लोगों को बहुत सुखी देखा है जो कुछ करते नहीं और उन्हें तारीफ भी नहीं चाहिये। ऐसे लोगों के काम करना बंद कर दें। उन्हें शांति से समझाएं कि आपको अब इतनी जिम्मेदारी लेनी ही होगी। चाहे हँस के या रो के।

कुछ ऐसे अच्छे दिल के है जो दिल से जितना बनता है उतना करते है और नहीं बनता है तो ''ना'' कहना जानते है। मैं जानती हूं मुझ जैसी बहुत सी औरतों की मां ने उनके शब्द कोष में ''ना'' शब्द नहीं डाला। हम औरतें मानो हां कहने के लिये ही पैदा हुई हैं। बुखार में भी पतिदेव को चाय बना के देती है। उन्हें माइक्रोवेव चलाना बताइये, खाना गरम करना सिखाइयें। पुरूषों को लग रहा होगा। मैं कितने हल्के विषय पर बात कर रही हूं। नहीं जनाब। ये विषय आपके जीवन की धुरी है वरना ऑफिस से लौटते ही मां और बीवी के बीच खड़े आप सोचते क्यों हो कि ये तो देश चलाने से जी ज़्यादा कठिन है।

इस एक बात की समस्या से आपका जीवन ऑफिस सब गड़बड़ हो जाते हैं। घर आने का मन नहीं होता। रोज़ रोज़ के झगड़े, शराब, विवाहेत्तर संबंध को बुलावा देते हैं। तो साहब इन सब का समाधान यही है कि आप सामर्थ्?य से ज़्यादा ना करें। इंकार करना सीखें। दूसरों से मदद लेने में छोटे नहीं हो जाएंगे। पति, लड़के के काम करने से शर्मिंदा ना हों। ये घर आपका भी है। बार-बार बीमार पड़ने, सामर्थ्?य से ज़्यादा करने पर, सब आपको पूछना बंद कर देंगे। थोड़े दिन है खुशी से गुज़ारिए और पूछते रहिए घर में सबसे और क्या कह रही है जिंदगी।

इन दिनों यह दृश्य आम है...

फोटो : बंसीलाल परमार

अभी तो पहुना दिल्ली दूर खड़ी है

जुगलबंदी

समीर लाल 'समीर'

लेखक कनाडा निवासी प्रख्यात ब्लॉगर और व्यंग्यकार हैं।

दिसंबर का पहला सप्ताह था। रात दो बजे दिल्ली हवाई अड्डे से कनाडा वापस आने की फ्लाइट लेनी थी। नोएडा में जहां हम रुके थे वहां से एयरपोर्ट पहुंचने में आमूमन एक से सवा घंटे लगने थे। चूंकि एयरपोर्ट तीन घंटे पहले पहुंचना होता है अतः थोड़ा मार्जिन रखकर नोएडा से 9 बजे ही टैक्सी से निकल पड़े। अभी निकले ही थे कि सामने से एक बारात निकल रही थी। आज मेरे यार की शादी है बैण्ड पर बज रहा था और बाराती झूम झूम कर नाच रहे थे। 10 मिनट नाच देखते रहे मजबूरी में, तब उन्हीं बारातियों में एक सज्जन रास्ता साफ कराते नजर आए मानो ट्रेफिक पुलिस का सारा जिम्मा उन्होंने ले लिया हो। हर बारात में एक फूफा यह जिम्मेदारी अपने कांधों पर थामे रहता है मगर हर बार 10 मिनट नाच लेने के बाद ही उसे अपनी जिम्मेदारियों का होश आता है।

खैर एक बारात से छूटे और अभी 4 मिनट भी न गुजरे होंगे, दूसरी बारात। ये देश है वीर जवानों का, अलबेलों का मस्तानों का बज रहा है और सब बाराती नाच रहे हैं। फिर 10 मिनट में फूफा अवतरित हुए और गाड़ी आगे बढ़ी। हर दो तीन मिनट में एक नई बारात- एक नया गाना और फिर एक नया फूफा। जैसे-जैसे नई बारात मिल रही थी, रात भी अपने शुमार पर चढ़ रही थी और बारातियों पर नशे का खुमार भी। शेर नाच देखा। नागिन नाच तो जमीन पर लोट लोट कर बाराती नाच रहे और सांप हमारी छाती पर लोट रहा था कि एयरपोर्ट कब पहुंचेंगे?

टैक्सी वाले ने रेडियो लगा दिया तो सुनाई पड़ा कि आज दिल्ली में 37,000 शादियां हैं। हमने तो अभी पिछले एक घंटे में 15 मिनट का सफर करके मात्र 11 शादियाँ क्रॉस की हैं। 37,000 रूह कांप गई। एक बार को लगा कि शायद पैदल इससे जल्दी पहुँच जाएंगे मगर सामान का ख्याल आते ही इस लगा को भगा दिया। वैसे खाली हाथ भी होते तो कौन इतना चल पाते। सोच का घोडा है कहीं भी दौड़ लेता है फिर हकीकत की लगाम उसे थामती है।

जब हमारे हाथ मे कुछ नहीं रह जाता तब हम प्रभु की तरफ ताकते है कि हे प्रभु, अब तुम्हीं नैया पार लगाओ।

अजब बात तो ये है बारात बढ़े न बढ़े, गाड़ी आगे बढ़े न बढ़े, समय तो बढ़ता ही रहता है।

आज मेरे यार की शादी से शुरू हुई एयरपोर्ट तक की यात्रा, अभी तो बबुआ पहली भंवर पड़ी है, अभी तो पहुना दिल्ली दूर खड़ी है से होते हुए बाबुल की दुआएं लेती जा तक जा पहुंची मगर जहां पहुंचना था वहां तक अभी भी न पहुंची। उधर आसमान नारंगी होने को था, चिड़ियां चहचहाने को लगभग तैयार थीं और हम एयरपोर्ट में घुसने को। घड़ी देखी 5~30 बजने को था मगर फिर भी हम टैक्सी से उतर कर एयरपोर्ट के मुख्य द्वार की तरफ भागे। हवाई जहाज तो दो बजे उड़ ही गया होगा मगर हम न जाने क्या पकड़ने भागे जा रहे थे।

काउंटर पर जाकर हमने कहा कि थोड़ा लेट हो गए। वो मुस्कराया और बोला कि इसे लेट होना नहीं कहते ङ्क इसे लेटकर सो जाना कहते हैं। आपकी नींद तब खुली है जब हवाई जहाज दुबई में उतरने को है।

अब क्या करते। दोनों टिकट बेकार चली गई। हाई सीजन था अतः अगली फ्लाइट महंगी और दो दिन बाद की मिली। दो दिन होटल में रुके रहे सो अलग। एयरपोर्ट से सटा हुआ होटल लिया तो थोड़ा महंगा तो था मगर फिर से बारात में फँसने की न तो की इच्छा थी और न ही हिम्मत।

आज इतने बरस बाद फेसबुक पर बैठा हूं तो सैकड़ों जानकार लोगों को 20 वीं शादी की सालगिरह की पोस्ट चढ़ाते देख रहा हूँ। उसमें से अधिकतर दिल्ली के हैं और याद आता है वो 20 बरस पहले आज ही का दिन था जब हम फंसे थे।

सोच रहा हूं इनको बधाई दूं या इनके बीच में 4000 डॉलर के नुकसान का मय ब्याज बंटवारा करके बिल भेज दूं। चलो इस घटना से प्रेरणा लेकर इतना भी हो जाए कि जिस तरह यहां बाईक लाइन अलग से होती है ताकि तेज रफ्तार गाड़ी, एम्बुलेंस और अन्य इमरजेंसी वाहनों को कोई तकलीफ न हो और सब कार्य सुचारु रूप से होते रहें, उसी की तर्ज पर एक बारात लाईन बनवा दो हर सड़क के किनारे किनारे। कौन जाने कौन सी जान किसी एम्बुलेंस में, किसी का सर्वस्व आग में तबाह होने से या किसी की एमेरजेन्सी फ्लाइट या रेल छूटने से बच जाए। हर इंसान तो मंत्री होता नहीं है कि उनके चलने के लिए सड़कें पहले से खाली करवा ली जाए और न ही हर एम्बुलेंस की किस्मत ऐसी होती है कि चुनाव का समय हो और मंत्री जी फोटो ऑप के चक्कर में एम्बुलेंस को रास्ता दे रहे हों।